॥ धर्मश्रीः सर्वमंगला ॥
ॐ
गीता परिवार
श्रीकृष्ण सेवा निधि
संत श्री ज्ञानेश्वर गुरुकुल
महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान

धर्मश्री

जुलाई, अगस्त, सितंबर - २०१८

समन्वय महर्षि संत श्री गुलाबराव महाराज

गुरुपूर्णिमा महोत्सव

।। धर्मश्री ।।

परम पूज्य आचार्य स्वामी गोविंददेव गिरि जी महाराज के उपदेशों एवं प्रवचनों पर आधारित

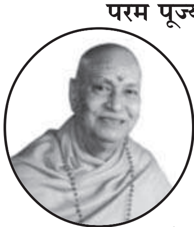

धर्मश्री

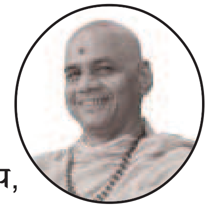

भारतमाता मंदिर (हरिद्वार) की सेवा में समर्पित

धर्मश्री प्रकाशन, मानसर अपार्टमेंट्स, सूर्यमुखी दत्तमंदिर के समीप,
पुणे विद्यापीठ मार्ग, पुणे-411 016 दूरभाषः (020) 25652589, 25672069
ईमेल : dharmashree123@gmail.com **वेबसाईट:** www.dharmashree.org

वर्ष १७ अंक ३ अश्विन, युगाब्द ५१२० त्रैमास सितम्बर २०१८

संपादक मंडल :
संपादक :
डॉ. प्रकाश सोमण
सह-संपादक :
श्री. भालचन्द्र व्यास
पं. अशोक पारीक
मार्गदर्शक :
प्रा. दत्तात्रय दि. काळे,
डॉ. संजय मालपाणी
सहयोगी :
श्री. हनुमान सारस्वत,
श्री. सकाहरि पवार
व्यवस्थापक :
श्री. श्रीवल्लभ व्यास,
श्री. अनिल दातार,
श्री. दत्ता खामकर
डी.टी.पी., मुखपृष्ठ :
जैनको कम्प्यूटर्स, अजमेर
सौ. अंजली गोसावी,
मुद्रक : **श्री. संजय भंडारे, पुणे**
स्वानंद प्रिंटर्स,
डेक्कन जिमखाना, पुणे – 411004
मो. नं.: 9823014862
svbhandare21@gmail.com

अनुक्रम

४ संपादकीय
५. प्रभु गजेंद्र के समान हमारी मदद क्यों नहीं करते ?
९. धर्मयात्रा २०१८
११. भारतरत्न स्व. अटलबिहारी वाजपेयी, जीवन दर्शन
१३. गुरुपूर्णिमा महोत्सव २०१८ सानन्द संपन्न
१६. माता-पिता की सेवा क्यों आवश्यक है?
१७. मीमांसा शास्त्र के आलोक में गीता दर्शन
२०. विंशतितम गीता साधना शिविर
२१. चंद्रग्रहण : एक अनुभव!
२२. श्री हरिहर भक्ति महोत्सव २०१८
२८. पूर्णयोग-बोधिनी गीता (८)
३२. सफलता के स्वर्णिम सूत्र
३६. महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान का कार्य विवरण
४१. गुरुजी आगामी कार्यक्रम

※ आवश्यक सूचना ※

समस्त लेखकों, गीता परिवार की शाखाओं एवं वेदविद्यालयों से विनम्र निवेदन है कि वे ''**धर्मश्री**'' में प्रकाशनार्थ सामग्री निम्न पते पर भिजवाने का कष्ट करें –
भालचन्द्र व्यास, सह-संपादक, ''धर्मश्री''
व्यास भवन, 209/29, गुलाबबाड़ी, अजमेर- 305007
फोन : 0145-2660498, मो. 09414003498
ई-मेल : bhalchandravyas43@gmail.com

धर्मश्री के इस अंक के यजमान
श्रीमती मंगला विनायक खनके (हरिद्वार)
साभिनंदन धन्यवाद !

सूचना
पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने व्यक्तिगत विचार हैं। उनसे पत्रिका या संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। – संपादक

शुभ दीपावलि

तमांसि भूयांसि निवारयन्ती । श्रेयांसि तेजांसि समुद्गिरन्ती ।
उल्लासयन्ती नितरां मनांसि । दीपावलिर्वस्तनुताद् यशांसि ।।

दीपावलि की हार्दिक शुभकामनाएँ!

संपादकीय

नये युग की सुप्रभात!

११ सितंबर १८९३। यही वह शुभदिन था जब शिकागो में विश्व धर्म परिषद के मंच पर स्वामी विवेकानंद के संक्षिप्त परंतु दिव्य मंत्रवत् भाषण के कारण विश्व के धर्मक्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन का सूत्रपात हुआ। विशेषकर भारत में तो विचारमंथन का मानो एक तुफान सा उठा। देखते ही देखते गत सौ–सवासौ वर्षों में हमारे पूरे देश में संगठन, सेवा, सुधार एवं प्रबोधन ने विराट रूप धारण किया। इसी कारण आज विश्व में हिन्दु समाज की एक ठोस पहचान बनी है। इसी का एक दृश्य प्रखर रूप था शिकागो में ७ से ९ सितंबर तक संपन्न हुआ **वैश्विक हिन्दु सम्मेलन** (World Hindu Congress)।

विश्व के ६० देशों से पधारे २५०० से अधिक सदस्य इसमें सहभागी हुए। इनमें सभी पंथ–संप्रदायों के धर्माचार्य, संगठन तथा समाज के सभी क्षेत्रों के उच्चकोटि की उपलब्धि प्राप्त करनेवाले विशेषज्ञों का समावेश था।

पूर्व प्रधानमंत्री भारतरत्न अटलबिहारी वाजपेयी एवं विख्यात लेखक व्ही. एस. नायपॉल इन्हें श्रध्दांजली अर्पण करने के बाद इस सम्मेलन का शुभारंभ शंखध्वनि तथा एकात्मता मंत्र से हुआ। प्रारंभ से ही एक विशेषता यह रही की हमारे देश का निर्देश निरपवाद रूप से **‘भारत’** ऐसा ही हुआ, हिन्दी में भी और अंग्रेजी में भी। आनेवाले समय का यह भी एक सुचिह्न सिद्ध होगा।

यह सम्मेलन वास्तव में ‘धर्म’ का सम्मेलन था न कि ‘रिलिजन’ का। क्योंकि ‘धर्म’ की भारतीय धारणा के अनुसार इसमें धर्म के ऐहिक एवं पारलौकिक पहलुओंपर विचार विमर्श हुआ। वह सुगठित एवं परिपूर्ण हो इस हेतु इस सम्मेलन के अंतर्गत वित्त, शिक्षा, स्त्रीशक्ति, छात्र एवं युवा संगठन, संपर्क माध्यम (मीडिया), लोकतंत्र एवं मंदिर–संगठन तथा संस्था ऐसे सात क्षेत्रों को समर्पित सात समांतर सम्मेलन चलते रहे। इन सभी सम्मेलनों में इन क्षेत्रों के गणमान्यवरों का मार्गदर्शन, कार्यकर्ताओं के अनुभव उनकी समस्याएं एवं निराकरण इन सबके कारण सभी सहभागी जन संतुष्ट हुए।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पू. सरसंघचालक मा. डॉ. मोहनजी भागवत के स्फूर्तिदायी प्रेरक वक्तव्य से ऊर्जाप्राप्त यह सम्मेलन प्रतिपल नई उँचाईयों को छूता गया, तथा समापन सत्र में हमारे उपराष्ट्रपति मा. वेंकय्याजी नायडू के वक्तव्य ने हर एक मन में देशप्रेम, कर्तव्य प्रेरणा एवं उत्कृष्टता की ज्योत जलाई।

इस सम्मेलन की वास्तव उपलब्धि रही देश के तथा विदेशस्थ हिन्दुओं का यह आत्मभान कि सभी जगह, सभी क्षेत्रों में स्थानिक तौरपर हम बहुत कुछ कर रहे हैं; आवश्यकता है संपर्क आदानप्रदान की एवं हाथ मिलाकर काम करने की।

संपर्क–माध्यम साधनों के कारण अब वह भी शीघ्र हो जाएगा और विश्व के लगभग २२० देशों में बसे हिन्दु बिखरे न रहकर एक समर्थ समाज के रूप में निखर उठेंगे इसी विश्वास के साथ २०२२ में तृतीय विश्व हिन्दु सम्मेलन हेतु बैंकाक में मिलने का संकल्प लिये सभी हिन्दुधर्मीय विदा हुए।

प्रभु गजेंद्र के समान हमारी मदद क्यों नहीं करते ?

'गजेंद्र-मोक्ष' किसी हाथी-विशेष की कहानी नहीं है, अपितु इसके सटीक प्रतीक मानव-जीवन की गुत्थियों को सुलझाने का सरलतम माध्यम है।

इस पर प.पू. गुरुदेव की व्याख्या सहज ही श्रोताओं की ''हर मुश्किल आसान'' कर देती है। - संपादक

विगत अंक से आगे...

इधर गजेंद्र अब व्याकुल हो गया। वह शनैः-शनैः और अधिक गहरे पानी में डूबता जा रहा था और सोच रहा था -

''अब मेरा कौन? अब मेरा कौन?''

गुरुदेव कहते हैं-

''एक बात बताऊँ? गजेंद्र ने पिछले जन्म में जरूर अच्छे कर्म किए होंगे, सत्संग किया होगा, ईशभक्ति की होगी, तभी तो पिछले जन्म के सत्संग की बात उसके भीतर जाग उठी।

हमने पिछले जन्मों में जो कुछ ज्ञानार्जन किया, सत्संग किया, ईश-भक्ति की, वह सब की सब हमारे ''ब्रेन- सेल्स'' में जमा होती रहती है। देहान्त के बाद भी उसकी पूरी 'चिप' हमारे साथ ही रहती है। हमारा सारा रिकॉर्ड हमारे साथ ही रहता है। बस, हमें review करना नहीं आता। इसलिए इच्छा हो तब भी, हम उसे सुन नहीं पाते; किंतु गजेंद्र के विगत सत्कर्मों की वजह से उसमें यह शक्ति जाग उठी। उसे नारायण का स्मरण हो गया। उसे नारायण के आश्रय का स्मरण क्यों हुआ? क्योंकि अब उसके सामने से उसका परिवार चला गया। गजेंद्र उनकी ओर से, इस संसार की सहायता की ओर से पूर्णतः निराश हो गया।अब गजेंद्र को विशुद्ध एकांत मिल गया। (यदि लोग-बाग आपस में मिलना-जुलना छोड़ दें और आपको अकेला छोड़ दें.. तो आनंद मनाओ)।

ज्ञानेश्वर महाराज कहते हैं-

''आपके लिए जो कुछ महान घटित होना है, वह अकेलेपन में ही घटेगा।''

मगर हमारे पास अकेले रहने की फुर्सत ही नहीं है। दिन भर में कुछ समय तो ऐसा होना ही चाहिए, जब हम एकांत में बैठ सकें, कुछ चिंतन कर सकें। ज्ञानी लोग कहते हैं,.. ''एकांत ही सबसे बड़ी पाठशाला है और मौन ही सबसे बड़ा पाठ!'' आप जब एकांत में होते हैं, स्वस्थ चित्त होते हैं, तब भीतर से कुछ महान विचार स्वतः ही प्रस्फुटित होते

हैं.. पढ़े हुए ही नहीं; अपितु बिना पढ़े हुए भी, सुने हुए ही नहीं, बल्कि बिना सुने हुए विचार भी आकर एक नया मार्ग दिखा जाते हैं; एक नया संदेश दे जाते हैं; क्योंकि ''सब-कुछ'' हमारे भीतर ही तो है। लेकिन हम कभी इस ओर ध्यान देने का समय ही नहीं निकालते।''

गजेंद्र को समय मिल गया और अपने प्रश्न का उत्तर भी। उसने सोचा, अरे, यह बात मेरे ध्यान में पहले क्यों नहीं आयी? उसे नारायण का स्मरण हो आया और उसका मन शांत एवं स्वस्थ हो गया।

आप भी जब इस बात पर विश्वास करेंगे तो आपका अंत:करण भी किसी भी स्थिति में हो शांत हो जाएगा। जरा सोचें, हमारा चित्त अशांत क्यों होता है? क्योंकि हम किसी वस्तु अथवा व्यक्ति पर निर्भर रहते हैं। "we are dependent upon something or somebody ."

यह पर-निर्भरता हमारे मन में असुरक्षा का भय उत्पन्न कर देती है। यह भय हमारे अंतःकरण को खा जाता है। तब, इसका उपाय क्या है?

भगवान् श्रीमद्भगवदगीता में कहते हैं-

अर्जुन, सुनो! शांति उसी को प्राप्त होती है, जिसको इस बात का पक्का विश्वास हो जाता है कि सारा संसार भले ही उसका त्याग कर दे; किंतु मैं उसका साथ नहीं छोड़ता। मैं सदा उसके अंदर विराजमान हूँ और मैं सदा उसका भला ही चाहता हूँ।

''सुहृदं सर्वभूतानां ज्ञात्वा
मां शान्तिमृच्छति।।''
(५-२९)

जीवन के किसी भी मोड़ पर संकट आ जाए, तो इस बात को कभी मत भूलना कि यदि आपने भगवान् को याद किया है, तो वे आपके साथ ही खड़े हैं। आपको उनकी मनुहार नहीं करनी है, आपको उन्हें केवल समझना है, केवल एक आवाज देनी है और वे आपके साथ हैं, उन्हें आपकी पूरी चिंता है, इस बात पर विश्वास रखना है।

''एवं व्यवसितो बुद्धया
समाधाय मनो हृदि।
जजाप परमं जाप्यं
प्राग्जन्मन्यनुशिक्षितम्।।''

> ''एकांत ही सबसे बड़ी पाठशाला है और मौन ही सबसे बड़ा पाठ!'' आप जब एकांत में होते हैं, स्वस्थचिन्त होते हैं, तब भीतर से कुछ महान विचार स्वत: ही प्रस्फुटित होते हैं.. पढ़े हुए ही नहीं; अपितु बिना पढ़े हुए भी, सुने हुए ही नहीं; बल्कि बिना सुने हुए विचार भी आकर एक नया मार्ग दिखा जाते हैं। एक नया सन्देश दे जाते हैं; क्योंकि ''सब-कुछ'' हमारे भीतर ही तो है। हम कभी इस ओर ध्यान देने का समय ही नहीं निकालते।

गजेंद्र ने अत्यधिक विश्वास के साथ नारायण की स्तुति आरंभ की।

इसी विश्वास के भरोसे संत गुलाबराव महाराज ने जीवन भर किसी की परवाह नहीं की, किसी की भी नहीं। अरे, बचपन में घर छोड़ना पड़ा तो कई दिनों तक, निवास का, भोजन का कोई पता नहीं। छोटे से बालक की कोई चिंता करने वाला नहीं।और प्रभु ने उन्हें बचाया, उनकी रक्षा की। उन्होंने परमात्मा के भरोसे ही जीवन में कभी कोई समझौता नहीं किया। यह विश्वास कहाँ से आता है जैसा गुलाबराव महाराज में था, जैसा गजेंद्र (हाथी) में था? थोड़े से लाभ के खातिर हम जीवन भर, एक के बाद एक समझौते करते ही जाते हैं। क्यों? क्योंकि हमारे अंदर उस परमात्मा के प्रति विश्वास का अभाव है। यदि मैं कोई गलत काम नहीं कर रहा हूँ, तो मुझे इस बात का दृढ़ विश्वास होना ही चाहिए कि वह प्रभु सदा मेरे साथ ही खड़े हैं, वे मुझे संभाल लेंगे। यह विश्वास जिसके भीतर होता है, उसके जीवन में लाचारी कभी नहीं होती, वह अशांत कभी नहीं हो सकता। वह गरीब हो सकता है, संकटग्रस्त हो सकता है, रुग्ण हो सकता है, परंतु अशांत कभी नहीं हो

सकता। सच्चे संत कभी किसी कारण से अशांत नहीं होते। वे सोचते हैं.. रोग होगा, तो यह शरीर जाएगा, हमारा क्या? वे शरीर को ही अपना नहीं मानते, तो भौतिक जीवन और भौतिक चीजों की तो बात ही क्या?

''गजेंद्र मोक्ष'' का यह अध्याय अत्यंत उपयोगी, विलक्षण, ज्ञानपूर्ण एवं प्रवृत्तिपरक है।

गजेंद्र ने अपने मन को स्थिर कर अपने पूर्वजन्म में कंठस्थ किए हुए सर्वश्रेष्ठ एवं बार-बार दोहराने योग्य स्तोत्रों द्वारा आर्ततापूण स्वरों में पुकार आरम्भ की-

''नमो नमस्तेऽखिलकारणाय,
निष्कारणायाद्भुत कारणाय।
सर्वागमाम्नाय महार्णवाय
नमोऽपवर्गाय परायणाय। ८-३.१५

गुणारणिच्छन्नचिदूष्मपाय
तत्क्षोभविस्फूर्जितमानसाय।
नैष्कर्म्यभावेन विवर्जितागम-
स्वयंप्रकाशाय नमस्करोमि।।
८-३.१६

मादृक्प्रपन्न पशुपाश-विमोक्षणाय।
मुक्ताय भूरिकरुणाय नमोऽलयाय।
स्वांशेन सर्व तनुभृन्मनसि प्रतीत-
प्रत्यग्दृशे भगवते बृहते नमस्ते ।।''
८-३.१७

गजेंद्र करुण-स्वरों में पुकार रहा है-

''हे मेरे नाथ, हे करुणानिधान! मैं पशु हूँ, काल के पाश में फँस गया हूँ, मुझे यहाँ से बाहर निकालो। हे दीनानाथ! मुझे ऐसी जगह ले चलो, जहां काल का भय न हो। हे मेरे प्रभु, मैं आपकी शरण में हूँ, मुझे बचाओ। मेरे नाथ! मेरा दुख, मेरी वेदना आपसे नहीं कहूँ, तो किससे कहूँ? आपके सिवा मेरा है ही कौन?''

इस प्रकार भयाक्रांत गजेंद्र उस परमपिता परमात्मा को बार-बार गुहार लगा रहा है। आकाशमंडल देवताओं से भर गया है, लेकिन कोई उसकी सहायता के लिए नहीं आ रहा है; क्योंकि नामरूपी देवता उस पुकार को स्वयं से संबंधित मान ही नहीं रहे हैं। वे समझते हैं कि गजेंद्र सनाम जब हमें बुलाएगा, तब जाकर उसे बचाएंगे। उन्हें अपने नाम और रूप का अभिमान है। इधर, गजेंद्र को ग्राह और गहराई में खींचता चला जा रहा है। उसका शरीर धीरे-धीरे डूबता जा रहा है। ऊपर आकाश से देवता लोग, यह सबकुछ देख रहे हैं, समझ रहे हैं कि गजेंद्र अब डूबा,अब डूबा; किंतु नाम रूपधारी अभिमानी देवता, उसे बचाने का कोई प्रयत्न नहीं करते।

गजेंद्र के सम्मुख कठिनाई यह है कि जिसे उसने पुकारा, वे आए नहीं और जो आए, उन्हें उसने पुकारा नहीं। इसलिए गजेंद्र की समस्या दूर नहीं हो रही है।

गजेंद्र डूबता गया और बार-बार नारायण को बचा लेने की गुहार लगा रहा है। वह व्याकुल हो रहा है.. ''अब मैं कैसे बचूंगा? अब तो केवल मस्तक ही जल से ऊपर रह गया है। उसने नजदीक से कमलपुष्प तोड़ा और सूंड को ऊपर उठाकर प्रार्थना की-

''हे नाथ! मेरा जैसा पशु जीया तो क्या और मरा तो क्या? ठाकुर, मैं पशु हूँ; यह सत्य है, लेकिन मैं तुम्हारी शरण में आया हूँ प्रभु! मेरे मर जाने और बच जाने पर संसार में कोई अंतर आने वाला नहीं है, लेकिन हे भक्तवत्सल! आप की शरणागति स्वीकार करने के बाद भी, यदि मेरी रक्षा नहीं होती है, तो यह भक्ति के लिए अत्यंत बड़ा धक्का होगा। आपके द्वारा भक्तों को दिए गए उस आश्वासन का क्या होगा? दौड़ो स्वामी, बचाओ नाथ!''

इधर, अब भी आकाश से कोई देवता गजेंद्र को बचाने नहीं आया। गजेंद्र का नारायण पर दृढ़ विश्वास है, उसने भी सोच लिया कि अब नारायण द्वारा बचाए जाने में ही उसकी शान है। वह इस विश्वास के भरोसे निश्चिंत हो गया।

पूज्य गुरुदेव कहते हैं-

याद रखना, आपके मन में भगवान् के प्रति जितनी तीव्रता होगी, लगाव होगा, उससे भी अधिक तीव्रता, लगाव भगवान् का आप के प्रति होगा। भागवत में इसी बात को बार-बार दोहराया गया है। कपिल महामुनि ने अपनी माता देवहूति से और महर्षि नारद ने भक्त ध्रुव से यही बात दोहराई है।

क्या आप लोगों को कभी नहीं लगता कि कितने दिन हो गए मैं पंढरपुर नहीं गया, वृन्दावन नहीं गया चलो, भगवान् के दर्शन करें, यह बात स्वयं ही उपजे, यही भगवान् के प्रति लगाव बताती है।

पूज्य गुरुदेव आगे इससे संबंधित एक सुंदर उदाहरण देते हैं –

''वृंदावन के महान संत थे स्वामी शरणानंद जी महाराज। आप एक महान भगवद्-भक्त एवं दार्शनिक थे। आँखे थी नहीं, प्रज्ञाचक्षु थे। वे रोज, नियम से बिहारी जी के दर्शनों के लिए जाते थे । अपने साथ शिष्य, सेवक जो भी उपलब्ध होते, उन्हें ले जाते। एक बार बहुत बरसात हो रही थी, घनघोर वर्षा रुकने का नाम ही नहीं ले रही थी। इधर, महाराज बार-बार जाने की रट लगाए हुए थे। इस पर एक सेवक उकता गया और झल्लाकर बोला,'महाराज, इतना क्या 'जाना-जाना' लगाया है आपने? वैसे भी आपको दिखता तो है नहीं, जाकर भी क्या देख लेंगे? कितना सरल प्रश्न? तुरंत महाराज बड़े शांत भाव से बोले, 'पागल, मुझे दिखता है या नहीं इस बात को छोड़ो, उसको तो दिखता है ना? वह तो भक्तों को देखता है ना? वह देखेगा, तो कहेगा कि आज शरणानंद नहीं आया, क्या बात है? मैं उसको देखने के लिए ही नहीं जाता हूँ, मैं उसको अपने को दिखाने के लिए भी नहीं जाता हूँ।''

कैसा अगाध विश्वास है भगवान् के प्रति! ऐसा जब लगने लग जाए, तब समझना कि भक्ति में अब कुछ प्रगति हुई है।

गजेंद्र की दृढ़ श्रद्धा को देख, भगवान् नारायण, वेगवाले गरुड़जी की पीठ पर बैठ उस स्थान पर पहुँच गए, जहाँ विपदाग्रस्त गजेंद्र था।

''सोऽन्तस्सरस्युरुबलेन गृहीत आर्त्तो दृष्ट्वा गरुत्मति हरिं ख उपात्त चक्रम्।
उत्क्षिप्य साम्बुजकरं गिरमाह कृच्छ्रा-
न्नाराणाखिलगुरो भगवन् नमस्ते।'' ।।३२।।

सरोवर के भीतर भयानक ग्राह के द्वारा पकड़े जाकर दुःखी हुए उस गजेंद्र ने आकाश में गरुड़ की पीठ पर चक्र उठाए हुए भगवान् श्रीहरि को आते देखकर, अपनी सूंड को; जिसमें उसने कमल का एक सुंदर फूल ले रखा था, ऊपर उठाया और बड़ी कठिनाई से बोला, 'सर्वपूज्य भगवान् नारायण! आपको प्रणाम है'।

तभी, उसे पीड़ित देखकर श्रीहरि एकाएक गरुड़ को छोड़कर, नीचे झील पर उतर आए और ग्राह समेत उस गजराज को तत्काल सरोवर से बाहर खींच लाए तथा सभी देवताओं के देखते-देखते, चक्र से उस ग्राह का मुँह चीरकर, गजेंद्र को मौत के मुँह से खींच लाए। यह सब कुछ क्षणांश में; पलक झपकते ही, इतना शीघ्र हो गया, कि चारों ओर खड़े नामधारी देवताओं को कुछ समझ में ही नहीं आया, कि यह सब इतने कम समय में कैसे हो गया? 'डूबतो गजराज राख्यो'.. आकाश से श्री भगवान् के जयकारे, 'वैकुंठनाथ भगवान् की जय!' के साथ ही पुष्पवर्षा होने लगी।

गजेंद्र ने अपना मस्तक श्री ठाकुर जी के चरणों पर रख दिया। उसके नेत्रों से अश्रुधारा बह रही थी। यह गजेंद्र पूर्वजन्म में इंद्र नामक राजा था; जो महर्षि अगस्ती के श्राप से इस योनि में आया था; जिसे भगवान् ने मोक्ष प्रदान किया।

पूज्य गुरुदेव ने कहा-

जो मनुष्य रोज 'गजेंद्रमोक्ष' का पाठ करता है और समर्पण भाव से प्रभु को मन से पुकारता है; उसके संकट ही दूर नहीं होते; भगवान् उसे मोक्ष भी प्रदान कर देते हैं।

जादुई ग्रंथ है गीता!

गीता ऐसा जादुई ग्रंथ, जो एक ओर अहिंसा के मार्ग पर चलनेवाले महात्मा गाँधी जी को एवं दूसरी ओर देश के लिए मर-मिटनेवाले क्रांतिकारियों को भी प्रेरणा प्रदान करती थी।

– पूज्यवर

धर्मयात्रा २०१८

– डॉ. प्रकाश सोमण

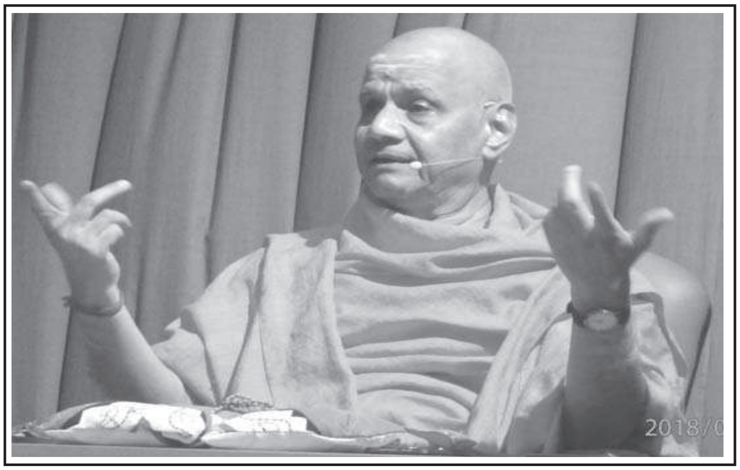

वर्ष १९९६ से प.पू. श्रद्धेय स्वामीजी विदेशों में भी प्रतिवर्ष अपनी अमृतवाणी से श्रद्धालुओं को कृपान्वित कर रहे हैं। इस वर्ष आपकी विदेशयात्रा का शुभारंभ दो विशेष कारणों से हुआ। पहला था वसई, महाराष्ट्र के सुविख्यात बालयोगी प.पू. स्वामी सदानंदजी महाराज एवं उनके शिष्योंद्वारा ज्ञानेश्वरी पारायण। संत शिरोमणी ज्ञानेश्वर महाराज की विचारधारा सर्वदूर पहुँचाने का लक्ष्य रखकर आपने पिछले कई वर्षों से भारत के महत्त्वपूर्ण तीर्थों में तथा मॉरिशस में ज्ञानेश्वरी की ध्वजा फहराई है। परंतु पश्चिमी देशों में यह पहली बार हो रहा था। दूसरी विशेषता यह की यह पारायण टोरांटो, कॅनडा के ज्ञानेश्वर भक्तोंद्वारा नये रूप से स्थापित विशाल जय दुर्गा मंदिर, स्कारबरो में हो रहा था। प्रात: पारायण के साथ सायं प.पू. स्वामीजी की ज्ञानेश्वरी भावकथा का आयोजन था। जैसे ही प.पू. बालयोगीजी के सुर में सुर मिलाकर उनके शिष्योंने ज्ञानेश्वरी का पारायण शुरू किया, कॅनडा की भूमि 'माउली' की मंत्रमयी वाणी से धन्य हो गयी, पवित्र हो गयी। पारायण समापन के दिन शाम प.पू. बालयोगीजी, प.पू. स्वामीजी एवं सभी भक्तगण ब्राम्पटन में स्थित संत ज्ञानेश्वर आश्रम में पधारे। यहा सभी भक्तोंने पारंपरिक वारकरी पद्धति से संगीत-नृत्य के साथ संत ज्ञानेश्वर महाराज के 'हरिपाठ' नामसे प्रसिद्ध अभंगोंका गायन किया। ऐसा लगा, मानों कॅनडा में आलंदी-देहू-पंढरपुर अवतीर्ण हो गये।

यह पहला पडाव यदि भक्तिरस के उल्लास का था तो दूसरा पडाव अमेरिका के पेन्सिल्व्हानिया राज्य में सेलर्सबर्ग स्थित 'आर्ष विद्या गुरुकुलम्' नाम के आश्रम में ज्ञानयोगमय था। प्रात:स्मरणीय प.पू. स्वामी दयानंद सरस्वतीजी द्वारा स्थापित यह आश्रम आपने में एक अद्‌भुत साधना स्थली ही है। यहाँ प.पू. स्वामीजीने अपने त्रिदिवसीय ज्ञानयज्ञ में संतशिरोमणि ज्ञानेश्वर महाराज के 'अमृतानुभव' इस ग्रंथरत्न पर विवरण किया। वैसे भी वारकरी संप्रदाय में इस छोटे परंतु अतीव कठिन वेदान्तपर ग्रंथ के अध्ययन का अधिकार सभी को नहीं है। परंतु इस ज्ञानसत्र के संयोजक एवं सहभागी श्रोतागण अमेरिका में बसे उच्चविद्याविभूषित तथा दीर्घकाल से भारतीय दर्शनों के अध्येता भी होने के कारण इस ज्ञानसत्र का आध्यात्मिक स्तर अपूर्व रहा। इस ज्ञानसत्र में सहभागी श्री. श्रीनिवासजी माटे उस संबंध में क्या कहते हैं यह उन्हीं शब्दों में जानिए।

लगभग छ: मास पूर्व श्री. मोहनजी एवं सौ. अलकनंदा भुजले का न्यूजर्सी से एंजेलिस में आने पर मेरा और मेरी श्रीमती शैला का उनसे मिलना हुआ। वहाँ उन्होंने एंजेलिस में आयोजित संत ज्ञानेश्वर महाराज द्वारा लिखित 'अमृतानुभव' ग्रंथ पर आयोजित त्रिदिवसीय व्याख्यान माला की संपूर्ण जानकारी दी। प.पू. आचार्य स्वामी गोविंददेव गिरिजी महाराज के श्रीमुख से अमृतानुभव पर व्याख्यान होगा यह सुनकर हम दोनों ही अत्यंत हर्षित हुए और

हमने बहुत अधिक समय न लगाते हुए उस व्याख्यानमाला में सहभागी होने हेतु तैयार हो गए।

दिनांक २२ से २४ जून की कालावधि में सेलर्सबर्ग शहर को सुशोभित कर रहे आर्ष विद्या गुरुकुल के दिव्य प्रांगण में यह व्याख्यानमाला आयोजित की गई। इस आश्रम में आने के पश्चात् भारत की पुरानी दिव्य गुरुकुल में आने का आभास हुआ। गुरुकुल के सभामंडप में पू. स्वामीजी के प्रवचनों का आयोजन किया गया था।

पू. स्वामीजी ने अमृतानुभव के माहात्म्य से अपने प्रवचनों का आरंभ किया। आपने बताया जिसने ज्ञानेश्वरी का अध्ययन किया है वह अमृतानुभव पढने का अधिकारी है।

यह लेख स्वामीजी के प्रवचनों का सार बताने के लिए नहीं क्योंकि स्वामीजी के कथनानुसार अमृतानुभव का रसग्रहण ३ दिनों मे कर पाना अत्यंत कठिन है। इसलिए स्वामीजी ने ग्रंथ माहात्म्य और उसमें आए दुर्लभ प्रकरणोंपर जोर दिया।

प्रतिदिन प्रवचन से पूर्व सभी श्रोता राम नाम संकीर्तन करके प्रवचन श्रवण हेतु एकाग्रता व चित्त को प्रसन्न करते। पू. स्वामीजी ने पहले दिन सब संतों को प्रणामकर संत गुलाबराव महाराज जी के शिष्य बाबाजी महाराज के 'अमृतानुभव दीपिका' ग्रंथ के माध्यम से आदि शंकराचार्य जी एवं संत ज्ञानेश्वर महाराज के विचारों की समानता का महत्त्व पूज्य स्वामीजी ने अपनी अधिकार एवं विद्वत्तापूर्ण वाणी में विचारधन श्रोताओं के समक्ष प्रस्तुत किए।

पूज्य स्वामीजी के प्रसन्न दर्शन एवं नादमधुर ध्वनि के द्वारा हम सब प्रवचनों में खो गए, हमें पता भी नहीं चला कि प्रचुर विद्वत्ता किंतु सरल भाषा, अनेक संस्कृत ग्रंथों के श्लोकों का प्रमाण, निरंतर चिंतन का व्यापक दृष्टिकोण स्वामीजी की इन सब विशेषताओंने इस प्रवचनमाला को और अधिक रोचक बना दिया। जे. कृष्णमूर्ति से लेकर एफ.एच.ब्रेडले जेसे तत्त्वज्ञों के चिंतन का परिशीलन इन प्रवचनों के माध्यम से हुआ। इस व्याख्यानमाला में अमेरिका के विभिन्न शहरोंसे ४० मुमुक्षु पधारे थे। पू. स्वामीजी का प्रवचन सुनकर सबका मन तृप्त हुआ।

धर्मयात्रा के तीसरे पडाव सनी व्हेल, कॅलिफोर्निया जाने से पहले प.पू. स्वामीजी ने फ्लशिंग नगर के समीप उनके एक ज्येष्ठ सुहृद डॉ. शरद रेगेजी के घर अल्पकाल विश्राम किया एवं कुशलवार्ता की। डॉ. रेगे, उनकी धर्मपत्नी सौ. विभाजी एवं सुपुत्र श्री. श्याम यह परिवार मानो प.पू. स्वामीजी का दूसरा घर ही हो।

सनी व्हेल में श्री. मंगेशजी फडके एवं उनके सहयोगी लंबे समय से कथा–सत्संगादि उपक्रमों का आयोजन कर रहे हैं। प.पू. स्वामीजी का शुभागमन यहाँ पहली बार हो रहा था। सभी मराठी भाषी होने के कारण आपकी हनुमान कथा मराठी में होना स्वाभाविक था। कथा का एक विशेष था सभी परिवारों के बालकों द्वारा प्रस्तुत 'हाउस ऑफ वॅक्स' नयी बात यह थी कि यहाँ के सभी 'मोम के पुतले' भारत के संत, समाजसेवक, वैज्ञानिक, शूर–वीर, क्रांतिकारी स्वतंत्रता सेनानी आदि थे। और जैसे ही आप उनके समीप जाकर पूछते, 'आप कौन है?', हर एक 'पुतला' अपना परिचय संक्षेप में देता। इस अनूठे उपक्रम से प.पू. स्वामीजी समेत सभी उपस्थित प्रभावित हुए।

अमेरिका के पश्चिमी छोर से एक लंबी हवाई छलांग लगाकर प.पू. स्वामीजी पहुँचे कॅनडा के मध्य में स्थित एडमंटन जहाँ वे लगभग २० वर्ष के अंतराल के पश्चात् जा रहे थे। वहाँ के नवनिर्मित विशाल मंदिर में आपकी कथा का आयोजन श्रीमती सुपर्णाजी मल्होत्रा ने किया था।

धर्मयात्रा का अंतिम चरण था बर्नबी, व्हँकुवर जहाँ से प.पू. स्वामीजी की विदेशों में धर्मयात्रा १९९६ में सर्वप्रथम शुरू हुई। एक सुंदर संजोग है कि प्रात:स्मरणीय स्वामी विवेकानंदजी जब सर्वप्रथम विदेश गये तब उनका भी प्रथम पदन्यास व्हँकूवर में ही हुआ था। यहाँ काफी मात्रा में बसे भारतीय श्रद्धालुओं द्वारा निर्मित विशाल नूतन मंदिर में प.पू. स्वामीजी की हनुमान कथा हुई और सभी ने 'पुनरागमनाय च।' कहते हुए पूज्यवर को विदाई दी।

भारतरत्न स्व. अटल बिहारी वाजपेयी
जीवन दर्शन

पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी बाजपेयी भारत माता के एक ऐसे सपूत थे, जिन्होंने स्वतंत्रता से पूर्व और पश्चात् भी अपना जीवन देश और देशवासियों के उत्थान एवं कल्याण हेतु जीया तथा जिनकी वाणी से असाधारण शब्दों को सुनकर आम जन उल्लसित होते रहे और जिनके कार्यों से देश का मस्तक ऊंचा हुआ। मध्य प्रदेश के ग्वालियर में एक ब्राह्मण परिवार में २५ दिसंबर, १९२४ को आपका जन्म हुआ। पुत्रप्राप्ति से हर्षित पिता श्री कृष्ण बिहारी वाजपेयी को तब शायद ही अनुमान रहा होगा कि आगे चलकर उनका यह नन्हा बालक सारे देश और दुनिया में नाम रोशन करेगा।

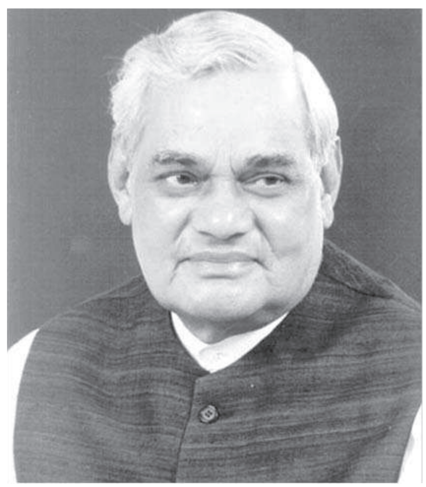

वाजपेयी जी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सक्रिय और सन् १९५१ में गठित राजनैतिक दल **'भारतीय जनसंघ'** के संस्थापक सदस्य थे। सन् १९६८ से ७३ तक वे भारतीय जनसंघ के अध्यक्ष थे। १९७७ से १९७९ तक भारत के विदेश मंत्री, सन् १९८०-८६ तक जनता पार्टी के संस्थापक सदस्य, सन् १९८०-८६ **'भारतीय जनता पार्टी'** के अध्यक्ष, सन् १९८०-८४, १९८६ तथा १९९३-९६ के दौरान भाजपा संसदीय दल के नेता रहे।

भारत के बहुदलीय लोकतंत्र में ये ऐसे एकमात्र राजनेता थे, जो प्राय: सभी दलों को स्वीकार्य रहे। इनकी विशेषता के कारण ये १६ मई, १९९६ से ३१ मई, १९९६ तथा १९९८-९९ और १३ अक्तुबर, १९९० से मई २००४ तक तीन बार भारत के प्रधानमंत्री रहे। भारत की संस्कृति, सभ्यता, राजधर्म, राजनीति और विदेश नीति की इनको गहरी समझ थी। बदलते राजनैतिक पटल पर गठबंधन सरकार को सफलतापूर्वक बनाने, चलाने और देश को विश्व में एक शक्तिशाली गणतंत्र के रूप में प्रस्तुत कर सकने की करामात आप जैसे करिश्माई नेता के बूत की ही बात थी। प्रधानमंत्री के रूप में अपने कार्यकाल में जहाँ इन्होंने पाकिस्तान और चीन से संबंध सुधारने हेतु अभूतपूर्व कदम उठाए वहीं अंर्तराष्ट्रीय दवाबों के बावजूद गहरी कूटनीति तथा दृढ़ इच्छाशक्ति का प्रदर्शन करते हुए पोखरण में परमाणु विस्फोट किए तथा कारगिल-युद्ध जीता।

राजनीति में दिग्गज राजनेता, विदेश नीति में संसार भर में समादृत कूटनीतिज्ञ, लोकप्रिय जननायक और कुशल प्रशासक होने के साथ-साथ ये एक अत्यंत सक्षम और संवेदनशील कवि, लेखक और पत्रकार भी रहे। विभिन्न संसदीय प्रतिनिधिमंडलों के सदस्य और विदेश मंत्री तथा प्रधानमंत्री के रूप में इन्होने विश्व के अनेक देशों की यात्राएं की और भारतीय कूटनीति तथा विश्वबंधुत्व का ध्वज लहराया। विभिन्न विषयों पर आपके द्वारा रचित अनेक पुस्तकें और कविता संग्रह प्रकाशित है। आजीवन अविवाहित, अद्भुत व्यक्तित्व के धनी स्व. वाजपेयी पढने-लिखने, सिनेमा देखने, यात्राएं करने और खाना पकाने और खाने के शौकीन थे। देश की आर्थिक उन्नति, वंचितों के उत्थान और महिलाओं तथा बच्चों के कल्याण की चिंता उन्हें हरदम रहती थी। राष्ट्र सेवा हेतु राष्ट्रपति द्वारा पद्म विभूषण से अलंकृत श्री वाजपेयी १९९४ में लोकमान्य तिलक पुरस्कार और सर्वोत्तम सांसद के भारतरत्न पंडित गोविन्द बल्लभ पंत पुरस्कार एवं भारतरत्न आदि अनेक पुरस्कारों, सम्मानों से विभूषित तथा सम्मानित थे। कई दशकों तक भारतीय राजनैतिक पटल पर छाये रहने के बाद अपने स्वास्थ्यजनित शारीरिक अक्षमता के कारण वर्तमान

...शेष पेज ४१ पर

चलो ! प्रयागराज कुंभमेला

कुंभमेला भारतीय संस्कृतिका एक अनोखा आयोजन होता है। उसमें भी तीर्थराज प्रयाग गंगा–यमुना–सरस्वती त्रिवेणी के तटपर आयोजित कुंभ तो विश्वका सबसे बडा गरिमामय आयोजन है। जनवरी/फरवरी 2019 में इस पवित्र आयोजन में सहभागी होकर पुण्यलाभ लेनेका सुअवसर संनिकट है यह हमारा सभी का सौभाग्य है। इस पावन पर्व के अंतर्गत प्रथम बार पू. गुरुदेव स्वामी गोविंददेव गिरिजी महाराज द्वारा –

दि. 20 से 26 जनवरी 2018 निम्न कार्यक्रम आयोजित हैं।

श्री दत्तपुराण कथा – प्रात: 9.00 से 12.30 (संस्कार चॅनेल पर लाईव्ह)

श्री हनुमान कथा – दोपहर 3.30 से 7.00 (दिशा चॅनेल पर लाईव्ह)

पूज्य गुरुदेव के दिनांकानुसार 70 वें जन्मदिन 25 जनवरी से लेकर तिथि अनुसार जन्मदिन षट्तिला एकादशी 31 जनवरी तक गीता परिवार के विभिन्न केंद्रों के द्वारा रात्रि में **संस्कृति दर्शन सप्ताह** का भी आयोजन किया गया है। सभी से अनुरोध है कि इसका लाभ लेने के लिये अग्रिम आरक्षण करें।

अधिक जानकारी हेतु संपर्क – श्री. हनुमानजी – 9420131000

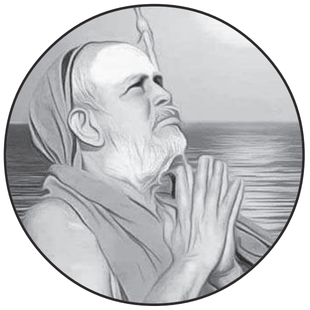

कांचीपुरी में भागवत सप्ताह

हमारी पवित्र सप्तपुरियों में शिवकांची तथा विष्णुकांची का एकत्र दर्शन करानेवाली कांचीपुरी अनोखी है। माँ कामाक्षी, भगवान् एकाम्रेश्वर तथा भगवान् वरदराज की तथा गुरुपरंपराकी विलक्षण कृपा प्राप्त करनेका सुअवसर संनिकट है।

कांची कामकोटि शंकराचार्य पीठ के प्रात:स्मरणीय ब्रह्मलीन पूज्य स्वामी श्री जयेंद्र सरस्वतीजी महाराज की महासमाधि के प्रथम वर्षपूर्ति समाराधना निमित्त–समाधि–वृंदावन संमुख प.पू. आचार्य स्वामी गोविंददेव गिरि जी के श्रीमुख से श्रीमद्‌भागवत कथा का आयोजन दि. 11 से 18 मार्च 2019 तक सुनिश्चित है। प्रथम दिन माहात्म्य तथा 12 से 18 मार्च सप्ताह कथा होगी। दि. 19 मार्च ब्रह्मलीन स्वामीजी महाराज की समाराधना है।

इस भव्य दिव्य आयोजन में महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान के 108 ब्रह्मचारी वैदिक बटुओं द्वारा भागवत पारायण सेवा प्रदान होगी।

इस पारायण के एक अथवा एक से अधिक पोथी यजमान बनकर श्रीगुरुसेवा का परम पुण्य आप प्राप्त कर सकते हैं। पोथी यजमान के अथवा केवल श्रोता के रूप में पधारकर यह दुर्लभ लाभ प्राप्त करें। पोथी यजमान अथवा निवास भोजन व्यवस्था हेतु संपर्क करें – **श्री. हनुमानजी – 9420131000**

गुरुपूर्णिमा महोत्सव २०१८ सानन्द सम्पन्न

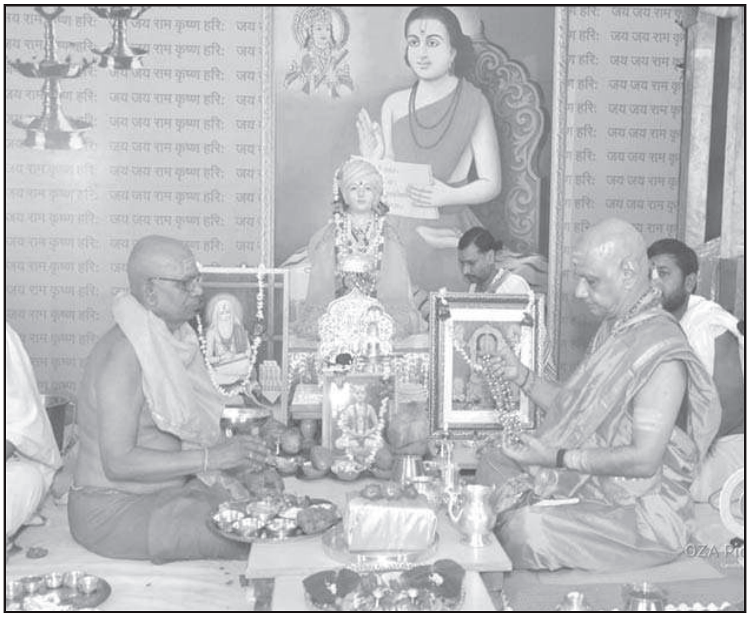

सदा की भांति इस वर्ष भी गुरुपूर्णिमा महोत्सव में देश के विभिन्न भागों से सैंकड़ों साधक ऋषिकेश स्थित वानप्रस्थ आश्रम में बड़े उत्साह से एकत्रित हुए । चीन्हे-अनचीन्हे साधक; चेहरे पर चमक लिए एक-दूसरे को बड़े स्नेह एवं अपनत्व के साथ, 'जय श्रीकृष्ण' और अग्रजों को आदर के साथ प्रणाम करते दिखाई पड़ते थे। सभी में परिवार-भाव दृष्टिगोचर होता था; क्योंकि सभी का 'केंद्र' जो एक था।

वस्तुत: साधक पूरे एक वर्ष तक इस दिन की प्रतीक्षा करते हैं। यह प्रतीक्षा आकंठ डूबने से मिले, उस आनंद की होती है, जो गुरु-दर्शन से प्राप्त होता है। वैसे भाव-रूप में वे वर्ष भर दर्शन करते ही रहते हैं; पू. गुरुदेव का प्रसन्न-वदन सदैव साधकों की स्मृति में रहता है, पर इस दिन इनके प्रत्यक्ष दर्शन, जीवन को साधने हेतु मार्गदर्शन प्राप्त करने तथा

समारोह के अंत में प.पू.गुरुदेव से प्राप्त स्नेहिल आशीर्वाद के रूप में होता है, जो पूरे वर्ष में उनमें नई ऊर्जा का संचार कर देता है ।

इस वर्ष गीता साधना शिविर, साधक सम्मेलन एवं हरिहर भक्ति महोत्सव आदि समस्त आयोजन गीताजी के प्रभामंडल में ही संपन्न हुए । शिविर में पूज्यवर द्वारा प्रात: गीता के १८ वें अध्याय की विस्तृत व्याख्या का शेष रहा भाग साधक सम्मेलन में इस प्रकार पूर्ण किया गया कि सम्मेलन में उपस्थित नवीन भक्त भी (जो शिविर में नहीं थे) गीताजी के इस 'कलशाध्याय' के सारांश से लाभान्वित हुए। तत्पश्चात रात्रि में भाविकों की आध्यात्मिक शंकाओं का समाधान प.पू. गुरुदेव द्वारा भी विस्तार से किया गया।

ध्यान सत्र :-

दूसरे दिन गुरुपूर्णिमा के कार्यक्रमों का शुभारंभ प्रात:कालीन ध्यान-सत्र से हुआ। इसमें योगाचार्य श्री जाधव सर द्वारा साधकों को ध्यान की सूक्ष्म प्रक्रिया से अवगत करवाया गया।

वरिष्ठ योगाचार्य श्री जाधव सर तथा जपानुष्ठान में १) वैखरी २) मध्यमा एवम् ३) पश्यंति के माध्यम

से ध्यान में जाना तथा पुन: विलोम पद्धति से अर्थात, पश्यंति से मध्यमा एवं वैखरी में आना बताया। आपने इस ''मंत्रश्वसन'' में ''श्रीराम जय राम जय जय राम'' के आधार पर भक्तों से इस प्रक्रिया को पुन:पुन: दोहराते हुए स्थूल से सूक्ष्म की ओर तथा पुन: सूक्ष्म से स्थूल की ओर जप करते हुए ध्यान करना सिखाया। इसे साधकों ने काफी पसंद किया, जिसका लाभ भक्तों ने इसी दिन रात्रि को चन्द्रग्रहण में जप के समय उठाया।

गुरुपूर्णिमा महोत्सव :–

ध्यानसत्र के उपरांत प्रात: ९.०० बजे सभी साधक पुन: सभागृह में गुरुपूर्णिमा के मुख्य आयोजन हेतु उपस्थित हुए। सभी प्रसन्नवदन एवं उत्साहित दिखाई दे रहे थे, चेहरों पर परमपूज्य गुरुदेव के दर्शनों की उत्कट अभिलाषा झलक रही थी। चारों ओर व्याप्त गहमागहमी आयोजन को भव्यता प्रदान कर रही थी । तभी अचानक 'सद्‌गुरु देव की जय', 'भगवान् वेदव्यास जी की जय', 'ज्ञानेश्वर माउली की जय' के उद्‌घोष के मध्य पू. गुरुदेव सभागृह में पधारे । आपके आगमन ने चहुँ ओर एक विशेष उत्साह फैला दिया।

महापूजा

महापूजा :–

मंच पर सभी देवी–देवताओं की मूर्तियां सजी हुई थी। इन्हीं के साथ समस्त गुरुओं के आदिगुरु महर्षि वेदव्यास जी महाराज की भव्य मूर्ति अलग ही शोभायमान हो रही थी । सर्वप्रथम पूज्य गुरुदेव ने प्रमुख यजमानों एवं तीनों न्यासों के उपस्थित न्यासीगणों को (समस्त साधकों के प्रतिनिधि स्वरूप) पूर्वनिर्धारित प्रक्रिया के अनुसार पूजन हेतु देवमूर्तियों का वितरण किया। तदनंतर, मंच पर पूज्य गुरुदेव द्वारा तथा मंच के नीचे साधक–प्रतिनिधियों द्वारा पूर्ण विधि–विधान से पूजन प्रारम्भ हुआ। मंच के ऊपर पू. गुरुदेव ने भगवान् गणपती, महर्षि वेदव्यास जी, संत ज्ञानेश्वर जी, चारों वेद तथा परम पूज्य परमाचार्य जी की चरणपादुकाओं का पूजन किया। साथ ही मंच से नीचे साधकों ने वैदिक पंडितों के निर्देशानुसार पूजा संपन्न की। सभागृह के बाहर स्थित यज्ञमंडप में यजमानों द्वारा महर्षि वेदव्यास जी के नामों की ८००० आहुतियों के साथ यज्ञ संपन्न किया गया। इस सम्पूर्ण

श्री आशु भैयाकी अगुवाई मेंगीता परिवार, लखनऊ उत्कृष्ट कार्य–प्रदर्शन हेतु पुरस्कृत

अवधि में शेष सभी भक्तों ने वहां संपन्न पूजा का आनंद लिया।

महापूजा के उपरांत, सभागृह में उपस्थित सभी भक्तगण, परम पूज्य गुरुदेव की अगुवाई में जपानुष्ठान में सम्मिलित हुए। इसके अंतर्गत, 'सर्व देवदेवी स्वरूपाय: सद्गुरु श्री ज्ञानेश्वर महाराजाय नम:', 'महर्षि वेदव्यासाय नम:' तथा तीसरा 'ज्ञानेश्वर माउली' आदि मंत्रों का जप अत्यंत श्रद्धाभाव से संपन्न किया।

ज्ञातव्य है कि महर्षि वेदव्यास जी महाराज भारतीय संस्कृति के सर्वोच्च उद्गाता होने के कारण 'महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान, पुणे' का कार्य उन्हीं के नाम से संचालित है । अत: प्रतिवर्ष गुरुपूर्णिमा, महर्षि वेदव्यास का पूजन, 'प्रतिष्ठान' के वार्षिकोत्सव के रूप में भी मनाया जाता है। अत: निर्धारित परंपरा के अनुसार प्रतिष्ठान के विगत वर्ष २०१७-१८ का कार्य निवेदन सहसचिव श्री चंद्रकांत जी के द्वारा एवं संत श्री ज्ञानेश्वर गुरुकुल की प्रमुख गतिविधियों का परिचय श्री राजकुमार जी मनिहार द्वारा पढ़कर

सुनाया गया । दोनों प्रतिवेदनों को सभी न्यासियों द्वारा महर्षि वेदव्यास जी के चरणों में प्रस्तुत कर दिया गया।

सौभाग्यशाली यजमान :–

गीता परिवार के तत्त्वावधान में उत्तर प्रदेश के महामहिम राज्यपाल श्री रामनायक जी की उपस्थिति में लखनौ में ३५१ संस्कार पथ शिविरों के महाकुंभ के सफल आयोजन को रेखांकित करते हुए परम पूज्य गुरुदेव द्वारा गीता परिवार, लखनौ को इस वर्ष गुरुपूर्णिमा का नि:शुल्क मुख्य यजमान घोषित कर पुरस्कृत किया गया। इस हेतु श्री आशु भैया एवम उनके साथियों को 'धर्मश्री' श्री. राजगोपाल जी मिणियार परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

आगामी गुरुपूर्णिमा के मुख्य यजमान हेतु श्री. किशोर जी भराड़िया, कटक (उड़ीसा) के विनम्र आग्रह को पूज्यवर द्वारा स्वीकृति प्रदान की गई। हरिहर भक्ति महोत्सव में श्री एवम श्रीमती भराड़िया जी को पूज्यवर ने मंच पर आशीर्वाद प्रदान कर कृतार्थ किया।

श्री एवम् श्रीमती भराड़िया जी को धर्मश्री परिवार की ओर से बधाई।

– श्री कमल भांगड़िया, हैदराबाद

माता-पिता की सेवा क्यों आवश्यक है?

''संस्कार चैनल'' को दिये गये एक साक्षात्कार में उपरोक्त प्रश्न का उत्तर देते हुए प.पू. गुरुदेव ने कहा था–

''माता–पिता की सेवा हमारा सर्वोपरि कर्तव्य, सर्वोपरि धर्म माना गया है। इसका महत्त्व हमें इस बात से समझना चाहिए कि जब गुरुकुल से अपना अध्ययन पूर्ण कर छात्र बाहर निकलता है, तो आचार्य उसे जो प्रमुख उपदेश देते हैं, वह है,–'मातृ देवो भव, पितृ देवो भव'– यह बताया जाता है। अत: हमारे धर्मशास्त्रों की दृष्टि से, आचार–शास्त्र की दृष्टि से बालकों के लिए अपने माता–पिता की सेवा अनिवार्य मानी गई है।

यह सत्य है कि हर जीव का कल्याण परमात्मा की आराधना से होगा, भगवान् की भक्ति से ही होगा, लेकिन भगवान् में भक्ति का बीज अंकुरित करने के लिए, जो अभ्यास किया जाना है, वह अभ्यास किस माध्यम से संभव हो? तो एक बालक के लिए माता–पिता ही पहले देवता हो जाते हैं और आजीवन रहते हैं।

मराठी में माँ के लिए शब्द है 'आई'। इस शब्द का विश्लेषण करने पर बनता है– 'आपला ईश्वर' अर्थात 'मेरा ईश्वर।' अत: 'आपला ईश्वर' – आ+ई। इस प्रकार बालक प्रथमत: अपनी माता में ही ईश्वर को देखता है। और उसे 'आई' कहता है जो सभी दृष्टि से सत्य भी है।

भगवान् की आराधना को हम लोग क्यों प्रधान मानते हैं? क्योंकि भगवान् ने निर्माण किया है, भगवान् ने हमें संभाला है, भगवान् ने हमें सुख दिया है आदि। जिस परमात्मा को हमने देखा नहीं, पहचानते नहीं, उसके लिए आध्यात्मिक लोग कहते हैं कि हम उस भगवान् के अंश हैं ! उसने हमें जन्म दिया है, पाला–पोसा है, सुविधाएं दी हैं। तो जिस भगवान् को हमने देखा नहीं, उस भगवान् की कल्पना करने से पूर्व हमें जिन लोगों ने जन्म दिया पाला–पोसा, बड़ा किया, उनमें हमारी श्रद्धा पहले जागृत होनी चाहिए या नहीं? अतः मुख्य बात यह रही कि 'दृश्य–भगवान्' (माता–पिता) में जब तक हमारी श्रद्धा जागृत नहीं होगी, तब तक 'अदृश्य –परमात्मा' में श्रद्धा केवल दम्भ भर ही रहेगा । इसलिए हमारे धर्म शास्त्र में यह बात आग्रह पूर्वक कही गई है कि जब आप दृश्य –देवताओं का अपमान करते हैं या उनकी सेवा करने से कतराते हैं, तो उस परमात्मा को भी अंतःकरण से नहीं मानते, उसका केवल शब्दों में ही उपयोग करते हैं, उसका ऐसा अर्थ माना जाएगा।

> जिस भगवान् को हमने देखा नहीं, उस भगवान् की कल्पना करने से पूर्व हमें जिन लोगों ने जन्म दिया, पाला-पोसा, बड़ा किया उनमें हमारी श्रद्धा पहले जागृत होनी चाहिए या नहीं? अतः मुख्य बात यह रही कि 'दृश्य-भगवान्' (माता-पिता) में जब तक हमारी श्रद्धा जागृत नहीं होगी, तब तक 'अदृश्य -परमात्मा' में श्रद्धा केवल दम्भ भर ही रहेगा ।

ज्ञानेश्वर महाराज कहते हैं कि सभी तीर्थों में श्रेष्ठ तीर्थ माता–पिता स्वयं हैं। भगवान् राम लक्ष्मण को उत्तर देते समय यह बात बता देते हैं कि–पुत्र पर माता–पिता का अधिकार आजीवन है, ऐसा मानने वाला पुत्र हूँ मैं।'

इस प्रकार धर्मशास्त्र हमें माता–पिता की सेवा करने का आदेश देते हैं।

मैं इस प्रसंग में एक प्रश्न करना चाहता हूं कि–यदि हमारे ऊपर कोई ऋण चढ़ा है और उसे हमने चुकाया नहीं, तो उसे क्या कहते हैं? उसे चोर ही कहा जाता है, उसे अपराधी ही माना जाता है। इसलिए माता–पिता की सेवा नहीं करने वाला पुत्र अपराधी और चोर ही कहलाएगा। क्या कोई भी भला आदमी आजीवन चोर कहलाना पसंद करेगा? नहीं ना? अत: माता–पिता की सेवा करना हर पुत्र के लिए अनिवार्य है। यह प्राचीन काल में था, आज भी है और आगे भी रहेगा, इसका कोई विकल्प नहीं।

(पाठक अपनी अध्यात्मसंबंधी शंकाएं हमें भेज सकते हैं।)

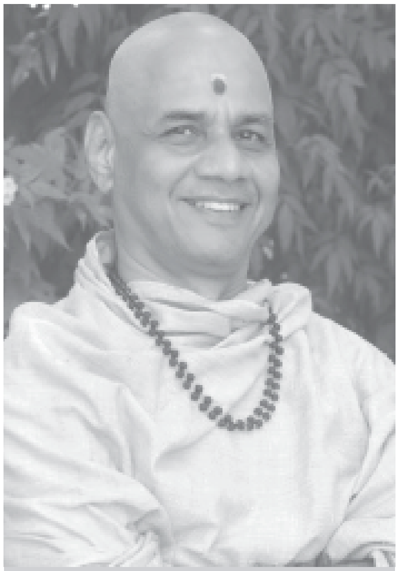

मीमांसा-शास्त्र के आलोक में गीता दर्शन

*इसमें कोई संदेह नहीं है कि श्रीमद्‌भगवद्गीता एक समग्र ''योग-शास्त्र'' है; जिसमें श्री भगवान् ने मोहग्रस्त जीव को आनंदप्राप्ति के परम लक्ष्य की ओर अग्रसर होने के अनेक साधन बताए हैं। फिर भी, इस बार... **'गीता साधना शिविर'** में पूज्यश्री ने दर्शनशास्त्र के अंतर्गत **'मीमांसा-दर्शन'** के आधार से ६ लक्षणों के मानक पर **गीता का मूल्यांकन** करते हुए यह सुनिश्चित किया है कि वस्तुत: गीता हर प्रकार से समग्र योगशास्त्र के साथ ही जीवन जीने की कला सिखाने वाला सर्वोपरि ग्रंथ है।*

श्रीमती जान्हवी जी ने पूज्यवर के प्रवचन का पाठकों के लाभार्थ सारांश तैयार किया है, जो दो भागों में यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है। ***(संपादक)***

> गीता में जहां हर प्रकार से भक्ति का प्रतिपादन है, वहां हमें अंत में ज्ञानाधिष्ठित सत्कर्मशील भक्तिमय दिव्य जीवन योग देती है।

किसी ग्रंथ का अर्थ कैसे लगाया जाए? ग्रंथकार हमें क्या कहना चाहता है, ग्रंथ के मूल तत्त्व तक कैसे पहुँचे, यह जानना जरूरी है। चिंतक अपने-अपने दृष्टिकोण से ग्रंथ की समीक्षा करते हैं। यही गीता जैसे परिपूर्ण योगशास्त्र के साथ हुआ। किसी को इसमें ज्ञान की, किसी को प्रपत्ति की, किसी को अनासक्ति की, तो किसी को इसमें भक्ति की प्रधानता दिखी। सभी अपने-अपने स्थान पर सही हैं, फिर प्रश्न यह है कि मुख्य तत्त्व तक कैसे पहुँचे?

इस प्रश्न का उत्तर षट्‌शास्त्रों में 'मीमांसाशास्त्र' ने दिया, जिसमें ग्रंथो के परीक्षण के लिए उसे छह लक्षणों के आधार पर देखना चाहिए, ऐसा कहा है।

उपक्रमोपसंहारो अभ्यासोऽपूर्वता फलम् ।
अर्थवादोपपत्तिश्च लिंगम् तात्पर्य निर्णये ।।

१) **उपक्रम-उपसंहार :-** ग्रंथ के प्रारंभ में क्या कहा हैं। अंत किस तथ्य पर हुआ?
२) **अभ्यास :-** किसी विशेष बात की पुनरावृत्ति, बार-बार आई हो।
३) **अपूर्वता :-** इस ग्रंथ में ऐसा क्या है, जो अन्य ग्रंथों में अभी तक नहीं आया। वह विचार, जो इसमें प्रथमतः मिला।
४) **फलम् :-** इसे पढ़ने पर क्या मिलेगा?
५) **अर्थवाद :-** मुख्य विषय में रुचि जागृत हो, इसलिए कुछ गौण बातें बताने से ग्रंथ के प्रति रुचि जागृत करना। भगवान् शंकराचार्य, 'वेदांत

केसरी' में लिखते हैं, बालक को कड़वी औषधि खजूर या आम में देनी होगी, (आजकल चॉकलेट में)'। तो कुछ कठिन नीरस बिंदु रोचकता के साथ देना अर्थवाद है।

६) उपपत्ति :– मुख्य बात, जो प्रमाणित करनी है, उसके लिए तर्क। यह तार्किक प्रक्रिया होती है।

मैंने गीता पर अनेक भाष्य पढ़े, सबका अपना अलग-अलग चिंतन। सब भाष्यकारों ने ऐसे चक्रव्यूह में डाला कि इसमें गौण क्या, मुख्य क्या, यह प्रश्न खड़ा हो गया?

गरुड़ की उड़ान के सामने चिड़िया की उड़ान छोटी ही सही, पर उसे उड़ने का अधिकार तो है। अत: मैने भी जब मीमांसा-शास्त्र के इन छह सूत्रों के आधार पर गीता का चिंतन किया, तब अनोखी बातें सामने आयीः–

''गीताकार हमें एक सुंदर यात्रा पर ले जाते हैं! यह यात्रा शरीर से विशुद्ध चिंतन तक है। यहां से उठकर कहीं जाना नहीं, पर शुद्ध परब्रह्म तक पहुंचना है। यह देहभाव से आत्मभाव तक की यात्रा है। गीता के साथ इस यात्रा पर चलते हैं।''

उपक्रम–उपसंहार

यात्रा के पूर्व टिकट लेते समय ही, हमें कहाँ से कहाँ तक जाना है, यह पता होना ही चाहिए। गीता का प्रारंभ दूसरे अध्याय के ग्यारहवें श्लोक से है। अर्जुन संभ्रमित है और भगवान् कहते हैं, जो गए या जो हैं, तू किसी का भी शोक न कर। मरती देह है। हम सब थे, हैं और रहेंगे। आत्म-तत्त्व को पहचान। अरे, यहाँ तो मन दुविधा में है और यह देह-देही का Heavy Dose! बात जमती नहीं। भगवान् चैतन्य तत्त्व की बात कर रहे हैं, देही का विलक्षण वर्णन है, पर हमें झमेले में डालता है। यह आत्मतत्त्व कैसा है ? तो ''वासांसि जीर्णानि...'', ''नैनं दहति...'' शरीर तो देही का, आत्मतत्त्व का वस्त्र है, जो बदलता रहता है। और यह देही कैसी? जो जलती न गलती! अरे, पूजा करते समय अगरबत्ती उँगली को जरासी छू जाए, तो 'हाय' निकलती है। ऐसा नहीं कि भगवान् के शब्द गलत लगते हैं। पर ऐसा है, इस पर विश्वास है; क्योंकि श्रद्धा है, पर समझना कठिन है। आश्चर्य यह है, कि यही गीता का उपक्रम है, प्रारंभ है! इसलिए गीता या ज्ञानेश्वरी पढ़नेवाले दूसरे अध्याय को पूर्ण करने के पहले ही हाथ जोड़कर इसे पूजा का ग्रंथ मान लेते हैं।

ये पूजनीय हैं ही, पर कर्म से, अभ्यास से जीवन में उतारकर। अभ्यास हेतु पाठ्यक्रम के पाठों का क्रम बदलते हैं, वैसे ही गीता का अर्थक्रम बदलकर भक्ति से १२ वें अध्याय से प्रारंभ कर सकते हैं। परन्तु उपक्रम कठिन क्यों?

हमारे सभी शास्त्रों में सर्वोच्च सिद्धांत पहले ही आते हैं। वेदव्यास जी महाराज ने वेदों के सार ५५५ ब्रह्मसूत्र में दिये । पर पहले चार सूत्रों में ही सब बातें आ गयी। इन्हें समझ लो तो आगे न भी पढो, तो चलेगा। ऐसे ही पतंजलि के १९१ सूत्रों में, प्रथम तीन में सब-कुछ सार आ गया है। ऐसा इसलिए ताकि इस यात्रा का जो गंतव्य है, (Destination) है वह पहले ही पता हो। उसी के अनुसार हमारी तैयारी हो। तो, भगवान् प्रारंभ में ही बता देते हैं, पहुँचना कहाँ है? अत: उपक्रम में आत्मतत्त्व का प्रतिपादन गूढ़ तो लगता है, पर यह एक जिज्ञासा भी उत्पन्न करता है कि यह क्या है? देखे! गीता का उपदेश उपक्रम में आत्म, अनात्म, परमात्म से मिलवाता है।

यात्रा के गंतव्य का पता है, पर बैठने से पहले दो बार देख लेते हैं कि गाड़ी कहीं और ही तो नहीं जानेवाली?

तो उपसंहार का विचार भी अभी करना आवश्यक है। दोनों का मेल जरूरी है।

भगवान् ने अपनी बात को जहाँ पूर्ण किया, वह अद्‌भुत है। वह है शरणागति! ईश्वर की शरण में जाओ। प्रारंभ आत्मतत्त्व से और अंत शरणागति में। यह शरणागति कैसी? किसकी?

गीता के १८ वें अध्याय के

६२ वें श्लोक से देखें,... तमेव शरणं गच्छ... अर्थात भगवान्, जो सारे विश्व का संचालन करते हैं, उन्हीं की शरण में जाना होगा। यह रहस्यमय बात बताने के बाद भगवान् फिर सारे उपसंहार का भी उपसंहार (सार) अंतिम परिच्छेद में करते हैं...

''मैंने जो कुछ कहा, उसका थोड़ेसे में सार बताता हूँ, सारे रहस्यों का रहस्य बताता हूँ''
''सर्वगुह्यतमं ... (१८/६४)''

पहले कहा, परमात्मा की शरण जाओ, जैसे वह कहीं और है, परोक्ष रूप में कहते हैं, फिर कहते हैं मैं गुह्यतम बात तुम्हें बताता हूँ; क्योंकि तुम मेरे प्रिय हो। याद रहे भगवान् के प्रिय होना जरूरी! और प्रिय हो, इसलिए परम हितकारी बात बताता हूँ। वह क्या है? तो ''मन्मना भव मद्भक्तो...'' १८/६५ तू मुझमें मन रख, वह भी भक्ति से। ऐसा हुआ तो मेरी प्रतिज्ञा है कि तू मुझे प्राप्त होगा। पहले परोक्ष रूप में परमात्मा की बात करते–करते कहा, 'अरे, वह ईश्वर और कहीं नहीं। तुम्हारे ही सामने है। समस्त रहस्यों का रहस्य, गुह्यतम बात कह दी। बाद के दो श्लोक यदि जीवन में उतारे, तो कुछ पढ़ने की आवश्यकता ही नही।'

भगवान् कहते हैं, 'तुम्हारे भीतर बैठा तत्त्व मैं ही हूँ। उपक्रम आत्मतत्त्व से व उपसंहार सब में मैं ही हूँ।'

भगवान् कण–कण में पर प्रतीति हमारे हृदय में।

भगवान् शंकराचार्य कहते हैं, अनुभूति सबसे पहले अंतर में हो फिर बाहर और फिर चराचर में होगी।

भगवान् ने आगे जो कहा, वह महत्त्वपूर्ण है मद्भक्तो मुझमें सतत मन रखने वाला मुझे प्राप्त होता है। यह सच है, पर मन में कैसे रखे? मेरा भक्त होकर!

कंस ने तो सतत मन में रखा, पर भय से। और शिशुपाल ने द्वेष से। यह नही चलेगा। मुझसे प्रेम करो, मुझमें मन प्रेम से लगे, फिर षोडषोपचार नहीं। बस एक नमस्कार की 'एकोपचार' पूजा भी मुझे तुम तक ले आएगी। नहीं, मैं तो तुममें ही हूँ, तुम मुझे अपने हृदय में पाओगे। भगवान् आगे कहते हैं, विश्वास के साथ सब त्यागकर मेरी शरण में आ जा, 'मैं' जो अंतर में, तेरा आत्मतत्त्व! और एक विशेष बात देखते हैं कि भगवान् कहते हैं,

''सर्वधर्मान्परित्यज्य.. सब धर्म कर्तव्य को त्यागकर..! इधर, प्रारंभ में स्वधर्म के पालन का उपदेश था।

गीता कर्तव्यबोधक है। अब अंत में ऐसा क्यों कहा? इस पर सोचे, तो एक बात समझ में आती है कि यह किसके लिए कहा है? ''मामेकं शरणं व्रज...'' जो भगवान् के शरण में जाने के लिए सिद्ध हुआ, फिर उसे धर्म–अधर्म से कुछ लेना–देना नहीं। शरणागति कैसी? 'माम् एकं', सब कुछ त्यागकर नहीं, सहज छूटा हो। त्यागने में भी अपनाना व 'मैंने छोड़ा', यह भाव होगा। पर सब छूटा में निःसंग हुए, अब दूजा न कोई! यह भाव थे रामकृष्ण परमहंस के, तुकाराम महाराज के, मीरा के। 'बिना सर्वस्व भूले, भगवद् प्राप्ति नहीं। जिसके जो कर्तव्य हैं, वो करे न करे। जिनके लिए भगवद्प्राप्ति ही सर्वोच्च जीवनमूल्य है, उसने लौकिक जीवन की बातों को किया तो क्या? और न किया तो क्या। भगवान् कहते हैं, तू केवल मेरी शरण आ!

यह शरणागति कैसी? तो गीता के महान भाष्यकार श्री मधुसूदन सरस्वती महाराज इसके तीन स्तर बताते हैं।

१) मैं प्रभु का, २) प्रभु मेरे ही और ३) हम दोनों बाहर से अलग पर भीतर से एक ही।

मैं संसार में हूँ पर हूँ उसी का, फिर वे मेरे 'ही' हैं, यह आग्रही ममत्व। हमारा भाव, भगवान् सबके हैं, उसका भाव मेरे ही हैं।

अंतरंग में भगवद्रूप को प्राप्त होता है। शरणागति। अब सागर की लहर जाएगी कहाँ? सागर में ही सोना गलाया तो मिलेगा कहाँ? सोने में ही न! पहले परोक्ष रूप से परमात्मा की शरण में जाओ कहा और फिर कहा, मेरी ही शरण में आ, मुझे प्राप्त कर। देहभाव से आत्मतत्त्व,परमतत्त्व में

...शेष पेज ३५ पर

विंशतितम गीता साधना शिविर

संत श्री ज्ञानेश्वर गुरुकुल, पुणे द्वारा प्रतिवर्ष गीता साधना शिविर का आयोजन किया जाता है। इसी शृंखला में गंगा के पावन तट पर वानप्रस्थ आश्रम, स्वर्गाश्रम, ऋषिकेश (उत्तराखंड) में शिविर संपन्न हुआ।

प.पू. स्वामी गोविंददेव गिरि जी महाराज के पावन सान्निध्य में कुल २८१ शिविरार्थियों ने आनंद की अनुभूति की, जिसमें १३० पुरुष और १५१ महिलाएँ शामिल हुए। प्रशिक्षक, कार्यकर्ता तथा शिविरार्थी मिलकर संख्या ३४४ रही।

इस वर्ष शिविर में महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान, गुजरात, तेलंगाणा, कर्नाटक, तमिलनाडू इन राज्यों तथा दुबई से शिविरार्थी सहभागी हुए। अभी तक संपन्न सारे शिविरों में सर्वाधिक संख्या इस बीसवें शिविर की रही।

प्रातः ४ बजे उत्थान और प्रभात फेरी से दिन की शुरुआत होती। प्रातःस्मरण और गङ्गास्नान के बाद योगाभ्यास आदरणीय श्री. सुधीर जी एवम् श्रीमती सुषमा राजे के मार्गदर्शन में होता रहा। योगाचार्य श्री सुरेशजी जाधव ने वरिष्ठ शिविरार्थियों को अष्टांग योग के प्रत्याहार सोपान से अवगत कराया। श्रीमती प्रमिलाताई माहेश्वरी से कुछ शिविरार्थियों ने प्राणायाम सीखा।

प. पू. आचार्य स्वामी गोविंददेव गिरि जी महाराज जब ध्यानाभ्यास करवाते, तब सभी साधक भावविभोर होकर ध्यानावस्था का आनंद लेते।

श्रीमद् भगवद्गीता के ३, ६, ९, १२, १५, तथा १८वें अध्यायों का शुद्ध उच्चारण शिविरार्थियों ने सीखा। पारंपरिक संथा पद्धति से कठिन लगनेवाले संस्कृत श्लोकों का उच्चारण भी आसान हो जाता है। यह अनुभव इस वर्ष पहली बार आए हुए शिविरार्थियों को आया।

प.पू. स्वामीजी के प्रवचन सुनना, मानों कानों से सुमधुर अमृत का पान करना। इस वर्ष स्वामीजी ने गीता के १२ वें अध्याय का ज्ञान सरल और सुबोध रूप में साधकों को प्रदान किया। स्वामीजी का यह ज्ञानयज्ञ शिविर का केन्द्रबिन्दु रहा। साधकों की धार्मिक एवम् आध्यात्मिक समस्याओं का समाधान स्वामीजी ने सरल शब्दों में किया।

गटशः चर्चा चिन्तनिका के माध्यम से प्रवचन से प्राप्त ज्ञान का पुनः अभ्यास होकर ज्ञान धारणा में सहायता हुई। प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी सम्पूर्ण गीता का पारायण तथा देवशयनी एकादशी के शुभ अवसर पर श्री विष्णुसहस्रनाम का पाठ आदरणीय जनार्दन जी पटवारी तथा विजयाताई गोडबोले के मार्गदर्शन में साधकों ने किया। आ. जर्नादन जी ने साधकों से मौन जप के माध्यम से अन्तर्यात्रा भी करवाई। सरल संस्कृत संभाषण से नरेश जी पाण्डे ने परिचय कराया।

मध्याह्न प्रवचन सत्र में पूज्य स्वामीजी ने मीमांसाशास्त्र की षड्लिंग विधि द्वारा श्रीमद्भगवद्गीता की ओर देखने का नया दृष्टिकोण प्रदान किया। यह दृष्टिकोण पाकर साधक धन्य हुए।

श्री. सतीश जी व्यास, श्रीमती विजयाताई गोडबोले और श्री. अमोल दायमा के मधुर स्वर में स्वर मिलाकर साधकों ने श्रीरामचरित मानस के गान का आनन्द लिया। श्री. लक्ष्मण पवार तथा श्री कानिटकर जी वाद्यसंगीत पर रहे।

रात्रि में राष्ट्रचिंतन के सत्र में विश्व हिन्दु परिषद के ज्येष्ठ कार्यकारिणी सदस्य मा. बालकृष्ण जी नाईक तथा राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री श्री. राघव जी ने सज्जन शक्ति समन्वय तथा व्यक्ति, परिवार और समाज, इन विषयों पर मार्गदर्शन

किया। श्री. अरुण जी नेटके ने श्रीराम जन्म भूमि, श्री. विवेक जी बिडवाई ने गोरक्षा, श्रीमती जाह्नवी जी केलकर ने विवेकानन्द केन्द्र का कार्य, श्रीमती सरिता जी उपाध्याय ने आधुनिक शिक्षा पद्धति से समस्याएँ, श्री आशु जी गोयल ने गीता परिवार का कार्य तथा श्री. प्रणवजी ने सरस्वती नदी इन विषयों पर प्रकाश डाला। देवशयनी एकादशी के शुभ पर्व पर जगद्गुरु आदि शंकराचार्य जी के श्रीविग्रह का अनावरण तथा चि. लक्ष्मीप्रसाद पटवारी द्वारा प्रस्तुत कीर्तन इस वर्ष के शिविर की विशेषताएँ रहीं।

प्रतिवर्ष की भाँति ही श्री क्षेत्र पंढ़रपुर की दिण्डी यात्रा की झलक तथा श्री गङ्गा आरती हर्षोल्लास के साथ मनाई गई।

श्री अन्नपूर्णालय में श्रीमती निर्मला जी मारू के मार्गदर्शन में बने सात्त्विक, रसपूर्ण, स्वादिष्ट आहार का आनन्द साधकों ने उठाया।

संत श्री ज्ञानेश्वर महाराज के शुभ आशीर्वाद से प.पू. स्वामी गोविंददेव गिरि जी की पावन उपस्थिति श्रद्धेय श्री. नारायणदास जी मारू के नेतृत्व में श्री. दामोदर जी मारू एवं श्री. आशु जी गोयल द्वारा सुचारू रूप से संचालित शिविर देवात्मा हिमालय की गोद में श्री. गङ्गा मैया के पावन तट पर संपन्न हुआ।

– **श्रीनिवास वर्णेकर**, नागपुर

चंद्रग्रहण : एक अनुभव!

इस साल का चंद्रग्रहण, गुरुकृपा से, एक अनोखा अनुभव देगा, ऐसा सोचा भी नहीं था; पर जो सोचते नहीं है वह हो जाए, वही तो कृपा होती है।

दिनांक २७ जुलाई, गुरुपूर्णिमा। गंगा का तट व सबसे महत्त्वपूर्ण प.पू. गुरुजी का सान्निध्य! तो यह बना 'मणिकांचन योग'।

गुरुजी का परामर्श ही हमारे लिए आज्ञा के समान। अतः सूतक-काल से (दोपहर १.३० बजे से सुबह तक) निर्जला रही। पूर्व में निर्जलव्रत किये हैं, पर ग्रहण पर कभी नहीं। तो मन बनाना पड़ा। रात को ११.५५ पर ग्रहण लगते ही स्नानकर सभी साधक प्रार्थनाकक्ष में एकत्रित हुए। गुरुजी नामस्मरण आरंभ करवा कर अपने कार्य हेतु चले गए। तत्पश्चात् सभी ने अपने-अपने इष्ट का मौन मंत्रजप किया, जो तीन घण्टे तक चला। सभागृह में ३०० के लगभग साधकों की उपस्थिति के बावजूद केवल अपने ही श्वास को सुन सकें। ऐसी शान्ति। ध्यान जप में एक अद्भुत अनुभूति हुई।

३ बजे से श्री गीताजी का १५ वां अध्याय, विष्णुसहस्रनाम, रामरक्षा, हनुमानचालीसा का सामूहिक पाठ सानन्द संपन्न हुए।

इसी अवधि में कुछ भाग्यशाली भक्तों को दीक्षा प्रदान कर प.पू. गुरुजी पुनः सभाकक्ष में पधार गए और ''जयजय राम कृष्ण हरि'' का जप हुआ और ठीक ग्रहण समाप्ति के पूर्व, ज्ञानेश्वर माउली के पसायदान से विश्व के लिए प्रसाद की याचना कर लगभग सभी, जिन्हें संभव था, गंगास्नान कर अपने-अपने कमरों में एक नई ऊर्जा, शांति व अद्भुत अनुभव के साथ लौटे।

मेरे लिए अनोखी बात यह थी कि संपूर्ण मौनजप में एक नवीन अनुभूति से साक्षात्कार हुआ। जिसमें मिले आनन्द के कारण जरासी झपकी भी नहीं आई। संयोग से उसी दिन सुबह आ. जाधव सर से मिले प्रत्याहार साधना के मार्गदर्शन का भी प्रत्यक्ष प्रमाण मिल गया! इस जप में मिली अलौकिक अनुभूति का वर्णन शब्दों में संभव नहीं।

सद्गुरु का हाथ मस्तक पर हो तो मुझ जैसी अज्ञानी को भी बड़े चिंतक, साधकों का सान्निध्य मिलता है और ईश्वर की कृपा बरसती है। अब हर 'ग्रहण' पर ये अनुभव सभी साधकों को साधना के लिये प्रेरित करेगा यह निश्चित है।

''मेरा'' अनुभव सुनाऊ, यह भाव कतई नहीं, पर गुरुप्रसाद सब तक पहुँचे, यही समझ कर बाँटा, अन्यथा लगे तो क्षमस्व।

– **श्रीमती जाह्नवी केलकर,**
औरंगाबाद।

कुरुक्षेत्र का मैदान, कौरव पांडवों का युद्ध, धृतराष्ट्र की चिंता, अर्जुन का मोह तथा भगवान श्रीकृष्ण का उपदेश आदि केवल स्थान और पात्रों से ही जुड़ा हुआ नहीं है, अपितु प्रतीक स्वरूप में यह जीवन–दर्शन तथा शाश्वत सत्य को उजागर करने की क्षमता रखता है, जिसकी व्यंजना शक्ति से नए–नए अर्थ प्रकट होते हैं।

श्री हरिहर भक्ति महोत्सव २०१८

इस वर्ष हरिहर भक्ति महोत्सव का आयोजन दिनांक २८ जुलाई २०१८ से १४ अगस्त २०१८ तक परम पूज्य गुरुदेव के पावन सान्निध्य में अत्यंत हर्षोल्हास के साथ वानप्रस्थ आश्रम, ऋषिकेश में संपन्न हुआ।

सावन माह की मनोहर फुहारों के मध्य, दिन में दो बार कथा श्रवण तथा सुबह- शाम विभिन्न पूजन – अर्चन एवं यज्ञादि के साथ बीते दिन के पश्चात् रात्रि में झूलोत्सव में रससिक्त भक्ति पदों के गायन के आनंद में डूबे भक्तों पर, प्रभाव ऐसा कि या तो धरती पर पग अथवा कुर्सी के हत्थों पर हाथ थिरकने को मचल उठे!

साधकों के लिए यह एक आदर्श दिनचर्या थी, जो अन्यत्र दुर्लभ थी । यही कारण है कि भक्तगण वर्षभर इस की उत्सुकता से प्रतीक्षा करते रहते हैं। इस वर्ष महोत्सव में करीब १४ प्रदेशों एवं भारत से बाहर दुबई आदि स्थानों से कुल मिलाकर ५०० भक्तों ने भाग लिया तथा आगामी वर्ष २०१९ हेतु स्थान सुरक्षित करवाने के लिए आतुर रहे भक्तों को वानप्रस्थ आश्रम में कमरों की सीमित संख्या को देखते हुए सभी को समायोजित करना कठिन रहा।

महोत्सव का प्रमुख आकर्षण

गीता भाव संपूर्ण दर्शनः–

उल्लेखनीय है कि परम पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य में यह दसवां हरिहर भक्ति महोत्सव था। इसके अंतर्गत अब तक के महोत्सव में पूज्यवर द्वारा श्रीमद् भागवत कथा, श्री राम कथा, महाभारत कथा, ज्ञानेश्वरी भाव कथा, एकादशस्कंध कथा (एकनाथी भागवत के विशेष संदर्भ में), श्रीकृष्ण लीलामृत (दशमस्कंध विशेष) कथा, संत चरित्र कथा तथा समन्वय महर्षि गुलाबराव महाराज की भावकथा के अतिरिक्त विगत वर्ष 'भक्तियोगरूपसंपूर्ण दर्शन' आदि पर विशेष कथाओं का आयोजन किया जा कर भाविकों को भक्ति के विभिन्न पहलुओं की विशेष जानकारी प्रदान कर तृप्त किया जा चुका है।

अत: इस वर्ष महोत्सव में पूज्यवर द्वारा ''गीता भाव सम्पूर्ण दर्शन'' के अंतर्गत श्रीमद्भगवद् गीता के ८ अध्यायों की अत्यंत सरस शैली में की गई व्याख्या से देश के विभिन्न भागों से आए सैकड़ों भाविक कृपान्वित हुए।

कथा में आपने बताया कि यह ग्रंथ (गीता) आकृति में लघुतम होते हुए भी भाव की दृष्टि से विश्व के समस्त ग्रंथों में महानतम है। श्रीमदभगवद् गीता महाभारत, उपनिषद् एवम् ब्रह्मसूत्र का सारतत्त्व है अर्थात, अमृत है । इसका महत्त्व इसलिए भी और अधिक बढ़ जाता है; क्योंकि वेद तो भगवान् के निश्वास हैं , किंतु गीता उनके स्वयं के श्रीमुख से नि:सृत हुई गंगा है। अत: इस के उपदेश रूपी गंगाजल को पीने वाला पुन: संसार–चक्र में नहीं फंसता अर्थात, गीता का पाठ करने वाला व्यक्ति निश्चित रूप से भगवान की सायुज्य मुक्ति को प्राप्त कर लेता है।

आपने कहा कि 'गीता का अध्ययन मनुष्य को भूतकाल के शोक, भविष्य के भय और वर्तमान के मोह से छुटकारा दिला देता है ।' कहने का अर्थ यह है कि हम आनंदस्वरूप परमात्मा के अंश हैं, अत: आनंद हमारा स्थायी भाव है, जो स्वार्थ, लोभ, मोह आदि की चादर से ढक जाता है, जिसे गीता के 'जीवनीय–सूत्रों' द्वारा दूर किया जा सकता है।

महाराजश्री ने बताया कि इसमें भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन के मन में उपजी सांसारिक मोह–माया को नष्ट करने एवं अपना कर्तव्यकर्म करने हेतु गीता के दूसरे अध्याय

सम्मान

झूलोत्सव

से अंत तक, आत्मा की अमरता तथा फल की कामना का त्याग कर अपना कर्तव्यकर्म करने का जो उपदेश दिया, उससे अर्जुन का मोह नष्ट हो सका तथा वह अपने कर्तव्यपथ पर अग्रसर हुआ। गीता का संपूर्ण ज्ञान अपने में उतारने के बाद ही वह यह जान सका कि परमपुरुष परमात्मा ही इस जगत के उत्पन्न होने का बीज है तथा संसार के सभी प्राणी अपनी-अपनी प्रकृति से इसमें उत्पन्न होते हैं तथा अपने-अपने कर्मों के फल भोगकर अन्तत:परमात्मा में ही विलीन हो जाते हैं।

वर्तमान संदर्भ में गीता का महत्त्व बताते हुए महाराज श्री ने कहा कि हजारों वर्षों के बाद आज भी गीता के 'जीवनीय-सूत्र' हमारे लिए उतने ही उपयोगी हैं जितने वे अर्जुन के लिए थे। क्योंकि हम भी इस संसाररूपी कुरुक्षेत्र में प्रतिक्षण अपने परायों से ही नहीं; अपितु स्वयं से भी अंदर-बाहर दोनो ओर संघर्षरत हैं। जो स्थिति अर्जुन की थी, वही हमारी भी है।

कुरुक्षेत्र का मैदान, कौरव पांडवों का युद्ध, धृतराष्ट्र की चिंता, अर्जुन का मोह तथा भगवान् श्रीकृष्ण का उपदेश आदि केवल स्थान और पात्रों से ही जुड़ा हुआ नहीं है, अपितु प्रतीक स्वरूप में यह जीवन-दर्शन तथा शाश्वत सत्य को उजागर करने की क्षमता रखता है, जिसकी व्यंजना शक्ति से नए-नए अर्थ प्रकट होते हैं।

कुरुक्षेत्र तो एक प्रकार से संपूर्ण जीव-जगत के संघर्ष का प्रतीक है, जिसमें सत-असत, जड़-चेतन पाप-पुण्य, शुभ-अशुभ, तथा ज्ञान-अज्ञान जैसे विरोधी भावों के मध्य अनादि काल से निरंतर जीवन-संग्राम चलता आया है और आगे भी चलता रहेगा। इस संग्राम में समस्त जीव जूझते आए हैं। कर्मफलों के त्यागी और स्थिर-बुद्धि के ज्ञानी-लोग ही अपने कर्तव्यकर्म को समझकर अकर्ता-भाव से शुभ काम करते चले, ताकि उनकी जीवात्मा मोहमाया के निकट रहकर भी समता योग के जरिए अपने जीवन के परमफल, मोक्ष, को प्राप्त कर सके। संक्षेप में कहे, तो कहना होगा कि आत्मा का उद्धार और परमात्मा से मिलन ही इस जीवनसंग्राम का लक्ष्य माना गया है।

व्याख्या शैली की विशेषताएँ:–

पूज्य गुरुदेव की कथाशैली की अपनी कुछ ऐसी विशेषताएँ हैं, जो अन्यत्र दुर्लभ हैं, फिर चाहे वह भागवत हो या रामकथा अथवा गीता। श्रोता उस समय चकित रह

झूलोत्सव में आनंद मग्न भक्तगण

महोत्सव में संपन्न यज्ञोपवीत संस्कार

जाते हैं जब उनके मन में उठने वाली शंकाओं का समाधान उन्हें कथा में ही मिलता है।

१) श्रीमद्भगवद्गीता के संपूर्ण १८ अध्यायों की व्याख्या के स्थान पर इस वर्ष केवल ८ अध्यायों की व्याख्या ही हो पाई। इसका कारण भक्तों पर आपकी अतिरिक्त कृपा ही समझी जाए।

२) आपकी सोदाहरण, सरस एवं विस्तार से की गई व्याख्या में समय तो अवश्य लगा, किंतु वह साधारण, मध्यम एवं श्रेष्ठ सभी प्रकार के भक्तों को सहज ही ग्राह्य हो गई।

३) प्रत्येक श्लोक की व्याख्या करते समय पूज्यवर द्वारा बीच-बीच में आदिशंकराचार्य के 'ब्रह्मसूत्र', 'विवेक चूड़ामणि' के अतिरिक्त सन्त ज्ञानेश्वर की 'ज्ञानेश्वरी' तथा श्रीमद्भागवत से ही नहीं; अपितु पाश्चात्त्य दार्शनिको से भी की गई तुलनाएँ भाविकों को अत्यधिक प्रभावित एवं आनंदित कर देती हैं।

४) महाराजश्री द्वारा की गई व्याख्याओं में श्लोकों के अर्थ विस्तार हेतु प्रयुक्त, सरस कथाओं का सुंदर एवं सटीक प्रयोग श्रोताओं के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध होता है, उदाहरणस्वरूप आर्तभक्त की वेदना प्रदर्शन हेतु गजेंद्र एवं ज्ञानीभक्त हेतु सुदामा आदि की कथाएँ उल्लेखनीय है।

५) व्याख्या में आधुनिक उपमाओं के प्रयोग का तो क्या कहना! यथा कर्मयोगी के मन हेतु कमल की एवं हम जड़भक्तों के मन की तुलना ''स्पंज'' से करना अथवा शरीर की तुलना मोबाइल से एवं जीवात्मा की तुलना ''सिम' से करना सभी को सहज ही समझ में आनेवाला है।

इस प्रकार पूज्यवर द्वारा की गई प्रथम आठ अध्यायों की प्रभावशाली व्याख्या ने भक्तों को शेष बचे अध्यायों की व्याख्या श्रवण हेतु अगले वर्ष आने को लालायित कर दिया।

पूजन-अर्चनादि :-

प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी हरिहर भक्ति महोत्सव में पूर्ण विधि -विधान के साथ श्रावण मास में विशेष फलदायिनी विभिन्न पूजाओं का भाविकों द्वारा सहज ही लाभ उठाया गया, जो सामान्यत: व्यक्तिगत स्तर पर असंभव था। इस प्रकार पूजन-अर्चन से कुल ४०० भाविक लाभान्वित हुए। इस वर्ष संपन्न श्री गंगा लक्ष्मी नारायण यज्ञ १२ पंडितों द्वारा प्रतिदिन पूर्ण विधि-विधान से संपन्न करवाया गया, जिसमें २४

पूजन

भक्तों ने सहर्ष भाग लिया और सैकड़ों भक्तों ने दर्शनलाभ लिया। इसके अतिरिक्त महोत्सव में संपन्न सवालक्ष से अधिक अंगुष्ठ प्रमाण पार्थिव शिवलिंगार्चन से १५० तथा तुलसीअर्चन से ७० एवं श्रीयंत्रकुंकुमार्चन से ९० से अधिक भक्त लाभान्वित हुए। महोत्सव में सायंकाल संपन्न होने वाले लघु रुद्राभिषेक में प्रतिदिन ११ वैदिक पंडितों द्वारा १२१ पाठ प्रतिदिन के हिसाब से कुल २११८ पाठ संपन्न हुए और इसमें ३० भक्तों ने भाग लिया।

दोलोत्सव तथा अन्य उत्सवादि:–

महोत्सव में रात्रिकालीन झूलोत्सव का सदैव से आकर्षण रहा है। रात्रि ८.३० बजे से ९.३० बजे तक नित्य नए आभूषणों एवं पोशाकों में भगवान् को सजाकर झूला झुलाने का अपना अलग ही आनंद है, जो प्रत्येक भक्त उमंग के साथ पूर्ण करता है। इस अवसर पर राधा कृष्ण के रससिक्त पदों का गायन एवं इनसे आनंदित हो भगवान् के समक्ष संपन्न नर्तन की अपनी अलग ही छटा रहती है। श्री. सतीशजी व्यास एवं श्री. अमोल जी दायमा तथा श्री गिरिराज जी व्यास की भक्तिरस से ओतप्रोत भजनों एवं गीतों की प्रस्तुति से श्रोता झूम उठते हैं। गायन के साथ तबले पर श्री. गौरव कान्हेकर, ढोलक पर श्री. योगेश इंदौरिया तथा सिंथ पर श्री. लक्ष्मण पवार की संगत सभागार में फैले आनंद को द्विगुणित कर देती है।

मंच पर स्थापित मन्दिर में वृन्दावन वेदविद्यालय से पधारे 'युगल-सरकार' की मूर्तियों का नित नया शृंगार, मंजू जी पवन जी अग्रवाल, कोलकाता एवं वृंदाजी लड्डा, मानवत द्वारा किया जाता था तथा रात्रि में संपन्न झूले में विराजित राधा कृष्ण की मूर्तियों का शृंगार श्रीमती चंद्रकांता जी चौधरी द्वारा तथा झूले की सज्जा श्रीमती निर्मला जी मारू, कोटा द्वारा की जाती थी। भक्त सदैव इस नित नए शृंगार को निहारने के लिए लालायित रहते थे।

उपनयन संस्कार :–

सदैव की भांति इस वर्ष भी दिनाक १२ अगस्त २०१८ को अन्नपूर्णालय के हॉल में २८ बटुओं का उपनयन संस्कार पंडित रेणुकादासजी के आचार्यत्व में संपन्न हुआ। इसमें ५ वेदविद्यालयों के नवीन प्रवेशार्थियों का यज्ञोपवीत संस्कार सानन्द संपन्न हुआ। इस कार्यक्रम में कई भक्तों ने उत्साह से भाग लिया। सभी बटुओं को परम पूज्य गुरुदेव के द्वारा स्वयं मंत्र उपदेश प्रदान कर धन्य किया गया। तत्पश्चात् सभागार में प.पू. गुरुदेव द्वारा प्रदत्त भिक्षा के उपरांत सभी भाविकों में भारी उत्साह के साथ बटुओं को भिक्षा प्रदान करने की होड़ लग गई। फलस्वरूप,उनकी झोलियाँ भर गई। इस अवसर पर इनके आचार्यगण एवं अभिभावकगण भी उपस्थित थे।

गीता संथा:–

महोत्सव में इस बार शिविर के समान ही भक्तों को श्रीमती सुवर्णा मालपाणी संगमनेर द्वारा गीता के श्लोकों का शुद्ध उच्चारण का अभ्यास करवाया गया। इससे कई भक्त लाभान्वित हुए।

गुलाब गौरव का पारायण:–

प्रतिवर्ष के समान इस बार भी समन्वय महर्षि गुलाबराव महाराज के **'गुलाब गौरव'** का पारायण दिनांक ३१ जुलाई से २ अगस्त तक प्रात: ७.०० बजे से ८.०० बजे तक अत्यंत श्रद्धाभाव से किया गया। इस बार इस अवसर पर चांदुरबाजार से श्याम महाराज भी पधारें; जिससे सभी आनंदित हुए। इस पारायण में मराठी भाषियों के अतिरिक्त हिंदी भाषी भी सम्मिलित हुए। इनमें सौभाग्यवती प्रतिभा प्रभाकर, सौभाग्यवती शोभा हरकुट, श्री महेश ध्रुव, सौभाग्यवती कमला व्यास, सौभाग्यवती रुक्मिणी जी, श्रीमती नीला अभ्यंकर, श्रीमती सुनीता चिंचोलकर, श्रीमती मंगल, सौभाग्यवती वैजयंती माहेश्वरी, सरोज भैया, सरोज प्रदीप, नन्दा बसवेकर आदि के नाम उल्लेखनीय है।

शुभागमन:–

उल्लेखनीय है कि दिनांक ५ अगस्त को परमार्थ निकेतन, ऋषिकेश के महामंडलेश्वर स्वामी असंगानंद जी महाराज का महोत्सव में पदार्पण हुआ। इस अवसर पर पूज्य स्वामीजी महाराज ने भक्तों को अपना आशीर्वाद प्रदानकर कृतार्थ किया।

इसी प्रकार दिनांक १० अगस्त को भारतमाता मंदिर के सचिव श्री आई.डी शास्त्री तथा १२ अगस्त को विश्व हिंदू परिषद के वरिष्ठ अधिकारी श्री. चंपतराय जी एवं श्री.

दिनेश जी ने परम पूज्य महाराज श्री का माल्यार्पण कर आशीर्वाद प्राप्त किया ।

सेवा एवम् व्यवस्था:-

श्री हरिहर भक्ति महोत्सव की तैयारी से लेकर संपन्न होने तक आदरणीय काका जी श्री. नारायणदास जी मारू, सुरत, श्री. चंद्रकांत जी केले, धुलिया के नेतृत्व में तथा श्री. कमल नारायण जी भाँगड़िया, हैदराबाद की अगुवाई में संयोजन समिति के सभी सदस्यों ने जिस उत्साह एवं परिश्रम से निर्धारित लक्ष्यों को सफलता के साथ पूर्ण किया, वह सराहनीय है। इनमें समस्त दैनिक पूजन की प्रात: ५.०० बजे से पूर्व तैयारी करने में श्रीमती निर्मला ओमप्रकाश जी मारू, सूरत तथा रात्रिकालीन झूलोत्सव हेतु श्रीमती निर्मला दामोदर जी, कोटा के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है ।

राम रसोड़ा:-

महोत्सव में आए सेंकड़ों भक्तों की सुंदर भोजन-व्यवस्था श्री. चंद्रकांत जी केले तथा श्रीमती ललिता जी मालपाणी, संगमनेर की सीधी देखरेख में संपन्न हुई। पूरे पखवाड़े में यथासमय चाय, नाश्ता एवं दोनों समय स्वादिष्ट भोजन-व्यवस्था ने सभी भाविकों को घर जैसी उत्तम सुविधा प्रदान की।

उल्लेखनीय है कि श्री. केले काका को वेदश्री तपोवन के कार्य को तीव्र गति से पूर्ण करने की दृष्टि से आगामी वर्ष के लिए मुक्त करते हुए पू.गुरुदेव ने आपकी सेवाओं की प्रशंसा की एवम् श्रीमती केले काकी जी के साथ जोड़े से शाल ओढ़ा कर सम्मानित किया। तथा श्रीमती ललिता जी मालपाणी, संगमनेर को भी रसोड़े में सेवा हेतु शाल ओढ़ा कर सम्मानित किया। साथ ही आगामी वर्ष में रामरसोड़े के संचालन हेतु श्री. कमल जी भाँगड़िया, हैदराबाद तथा आ. मारू काका को पगड़ी पहनाकर आशीर्वाद प्रदान किया ।

सम्मान :-

अहर्निश सेवा कर महोत्सव के सम्पूर्ण कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु अथक प्रयासों को रेखांकित करते हुए परम पूज्य गुरुदेव द्वारा निम्नलिखित महानुभावों को सम्मानित कर उत्साहवर्धन किया गया। इनमें सर्व श्री. नारायणदास जी मारू, सूरत, श्री. चंद्रकांत जी केले, धुलिया, श्रीमती ललिता जी मालपाणी संगमनेर, श्री. कमल जी भांगड़िया, हैदराबाद, श्री. दामोदर जी मारू एवम् श्रीमती निर्मला जी मारू, कोटा तथा संध्याताई पटवर्धन, पुणे के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

स्वास्थ्य सेवा :-

इसके अतिरिक्त महोत्सव में आनेवाले सैकड़ों भक्तों के स्वास्थ्य संबंधी सभी प्रकार की कठिनाइयों का निवारण यवतमाल के डॉ. राशतवार जी ने जिस लगन एवं स्नेह के साथ किया, वह प्रशंसनीय है। इसी प्रकार मंच-संचालन श्री. दामोदर जी मारू, डॉक्टर द्वारकादास जी लड्ढा एवं श्री. चंद्रकांत जी केले काका द्वारा अत्यंत कुशलतापूर्वक संपन्न किया गया।

भक्तों के उद्गार :-

महोत्सव के अन्तिम दिन बिछुड़ते हुए भक्तों ने अपने भाव-भीने संस्मरण सुनाते हुए कहा कि - ''हम अब तक गीता जैसे गम्भीर विषय की क्लिष्टता के भ्रम से व्यर्थ ही डर रहे थे।'' यहाँ पू. गुरुदेव ने कृपा कर जिस सरसता के साथ जीवन के सत्य को हमारे सम्मुख उजागर किया और वह हमें जिस तरह सहज ही समझ में आ गया-उसकी तो हमने कल्पना भी नहीं की थी। काश! महोत्सव की अवधि बढ़ाई जानी संभव होती तो इसी वर्ष हमें संपूर्ण गीता की व्याख्या सुनने का सौभाग्य मिल जाता। वक्ताओं में डॉ. हरिप्रसाद जी लातूर, श्रीमती नीला जी अभ्यंकर, श्रीमती जाह्नवी जी केलकर आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

भाग्यशाली दैनिक यजमान:-

इस वर्ष हरिहर महोत्सव के भाग्यशाली दैनिक यजमान निम्न प्रकार थे :-

श्री. कैलाश नारायण जी भांगड़िया, श्री. नारायणदास जी मारू, श्रीमती सावित्री देवी बियानी, श्री. मुकेश जी सिंघल, श्री. गौरीशंकर जी झंवर, श्री. महावीर जी चांडक, श्री. विश्वनाथ जी सेक्सरिया, श्री. शिवरतन जी मोहता, श्री. जुगल जी कोटरी वाल, श्री. रमेश राजेश जी सोमानी, श्री. हरिप्रसाद जी गोयल, श्री किरण रवि जी सेठी, श्री. जगदीश जी सोमानी, श्री. प्रेम जी सैनी, श्री. प्रह्लाद सिंह जी, श्री. अशोक जी देवरा एवं श्री. सुशील जी गुप्ता।

- भालचन्द्र व्यास

पूर्णयोग-बोधिनी गीता (८)

प्राण और मन की स्थिरता अन्योन्याश्रित है।

अब तक हम देख चुके हैं :

भगवद्‌गीता ही पूर्ण योगशास्त्र है। मानवजीवन के आरंभिक स्तर से लेकर पारमार्थिक अनुभूति के अंतिम छोर तक पहुँचने की सभी सीढ़ियों का मार्गदर्शन हमें इस महान ग्रंथ में मिलता है। इसी दृष्टि से हम श्रीमद्‌भगवद्‌गीता का भिन्न क्रम में अध्ययन कर रहे हैं।

इसके अंतर्गत भगवद्‌गीता के ही माध्यम से हमने जाना कि किस प्रकार हम अपने आस-पास के वातावरण से लेकर अंतरंग की अंतिम अनुभूति तक कैसे पहुँच सकते हैं? गीता ने इसका पूरा पथ प्रदर्शन किया है, एक रोडमैप दिया है। उसके बाद हमने समाज के स्तर पर, आस-पास के पारिवारिक वातावरण के स्तर पर किया है तथा बुद्धि के स्तर पर किया तथा विगत अंक में हमने देखा कि किस प्रकार हम मन को व्यवस्थित कर पूर्ण योग की ओर बढ़ें।

प्रस्तुत अंक में प.पू. गुरुदेव हमें प्राणायाम की उपादेयता विषयक बहुमूल्य जानकारी प्रदान कर रहे हैं :-

प्राणायाम की उपादेयता

श्रीमद्‌भागवत के एक श्लोक में सारा योगाभ्यास आ गया। एक ही श्लोक में –

‘‘प्राणायामैर्दहेद्दोषान् धारणाभिश्च किल्बिषान्।
प्रत्याहारेण संसर्गात् ध्यानेनानीश्वरान् गुणान्।’’

इस प्राणायाम का उपयोग क्या होता है? सबसे पहला उपयोग यह है कि आपका स्वास्थ्य उत्तम हो जाएगा; क्योंकि आपकी सारी अंदर की क्रियाएँ अच्छी रहेंगी। हमारा स्वास्थ्य तभी बिगड़ता है, जब अंदर के किसी अवयव की क्रिया ठीक नहीं चलती। तो हमारे अंतरंग अवयवों की सारी क्रियाएँ ठीक करने के लिए इन प्राणों को ठीक करना आवश्यक है।

तो भगवान् कहते हैं कि भैय्या, उसको ठीक कर लो। अब उसको ठीक करना हो, तो क्या-क्या करना पड़ेगा? तो कहते है प्राणायाम करना है। लेकिन ऐसा है– अब आप लोग जो करते हो; वह ठीक है, लेकिन उत्तम प्राणायाम यदि ठीक से करना हो; तो उसके लिए जो तैयारी करनी होती है, वह आसनों से होती है। और केवल आसनों से ही नहीं होती, क्रियाओं से होती है। आसन और क्रिया से। उसके साथ-साथ बंध हैं।

*प.पू. गुरूदेव द्वारा प्रतिवर्ष वानप्रस्थ आश्रम, ऋषिकेश में आयोजित – ‘‘गीता साधना शिविर’’, जहाँ यह प्रवचन माला संपन्न हुई।

energy के केन्द्र होते हैं, वे कहीं, विद्युत का प्रवाह वेगपूर्वक आ गया, तो एकदम Burst न हो जाय, इसलिए एक Fuse होता है। सारा प्रवाह वहीं पर आ करके वह Fuse का तार तो जल जाएगा; लेकिन बाकी आफत टल जाएगी। तो इस प्रकार हमारी प्राणशक्ति के सभी आयामों को, यदि ठीक से चलाना है, तो उसके लिए षट्क्रियाओं का और आसनों का महत्त्व है। तीन बंधों का महत्त्व है। आपने सुना होगा। मूलबंध तो सुना ही है। फिर उड्डियान बंध है और जालंधर बंध है।

गीताकार इतने विस्तार में नहीं गए; लेकिन प्राणायाम के ऊपर जो जोर दिया है, उसके अंतर्गत ये सब आता है; क्योंकि ये सब ठीक नहीं किया होगा, तो प्राणायाम ठीक से होता ही नहीं है। उसके पूर्व जो प्राणायाम चलता है, वह कामचलाऊ प्राणायाम है। चल रहा है, कभीकभी होगा। लेकिन यह नाड़ीशुद्धि होना नितांत आवश्यक होता है। जबतक नाड़ीशुद्धि नहीं होगी, तबतक यह प्राण का गमनागमन, तबतक इस Energy Force का हमारे सारे अवयवों तक पहुँचना ठीक से चलेगा नहीं। यहाँ पर पूरा हठयोग आ गया। भगवान् इसका संकेत के साथ बड़ा सुंदर वर्णन कर देते हैं।

अपरे नियताहाराः
प्राणान्प्राणेषु जुह्वति।
सर्वेऽप्येते यज्ञविदो
यज्ञक्षपित कल्मषाः ।।४.३०।।

भगवान् ने प्राणायाम को भी यज्ञ कह दिया। तो ''प्राणापानगती रुद्ध्वा प्राणायामपरायणाः''। भगवद्गीता में स्थान-स्थान पर प्राणायाम का अलग-अलग वर्णन आता है। कुल मिलाकर भगवद्गीताकार प्राणायाम को जब स्वीकार करते हैं, तो प्राणायाम के अंतर्गत प्राणायाम की ही सिद्धि के लिए की जानेवाली सारी शुद्धि क्रियाएँ आवश्यक हैं। मुख्यतया यह सारा विषय हठयोग प्रदीपिका और घेरंड संहिता का है। हठयोग के ये दो प्रधान ग्रंथ हैं।

अब प्राण को भी स्थिर कर लिया। ये ऐसा नहीं है कि पहले स्थिर कर लिया, तो अब आवश्यकता नहीं है? नहीं, ऐसा नहीं है। वह प्राण के विजय की क्रिया बहुत वर्षों तक चलानी पड़ती है। प्राण और मन का एक दूसरे के साथ बड़ा अच्छा संबंध है। यदि प्राण स्थिर है; तो मन भी स्थिर होगा। और यदि मन स्थिर है; तो प्राण भी स्थिर होगा। ये इनका संबंध पक्का है। आप देखेंगे, जब कभी आपको क्रोध आता है, अपने आप आपके साँस की गति बढ़ जाती है। क्रोध आया मन में, परिणाम हो गया प्राण के ऊपर। उसी प्रकार यदि प्राण आपके अस्थिर होंगे, तो मन भी अस्थिर होगा। अब यहाँ पर एक विकल्प है, जो अपनी-अपनी योग्यता के अनुसार है। गीताकार का सम्मत विषय बोल रहा हूँ। कुछ लोग हठयोग अधिक करते हैं और ध्यान कम करते हैं। कुछ लोग ध्यान अधिक करते हैं, हठयोग कम करते हैं। ध्यानयोग हठयोग से अलग है। ध्यानयोग; जिसका दूसरा एक नाम है राजयोग, स्वामी विवेकानंद उसे राजयोग कहते हैं। हमारे प्राचीन ग्रंथों में भी उसका नाम राजयोग है। एक बात विशेष है। जिसने ध्यान के माध्यम से मन को स्थिर कर लिया, उसके प्राण अपने आप स्थिर हो जाते हैं। और जिसने हठयोग के माध्यम से प्राण को स्थिर कर लिया, उसका मन भी अपने आप स्थिर हो जाता है। दोनों में से एक को पकड़ो। एक को ही पकड़ लिया; तो दूसरा अपने आप स्थिर होना ही है। आप यह अपने ऊपर प्रयोग कर सकते हैं। जब भी क्रोध आया, आप की साँस फूली। साँस को शांत रख करके आप चिढ़ करके बताइये। चिढ़ नही सकते। किसी भी विकार में प्राण की गति बढ़ जाती है। विकार है मन का और गति बढ़ गई प्राण की। प्राण की गति बढ़ गई; तो मन स्थिर नहीं हो सकता। दूसरा एक प्रयोग आप कर सकते हैं। अच्छी पुस्तक जिसमें आपका मन लगता है, उसे पढ़िये और जैसे-जैसे आप उस पुस्तक को अधिकाधिक पढ़ते जाएंगे, आप यह भी अनुभव करेंगे कि आपकी सांस एकदम धीमी हो गई; आपका मन स्थिर हो गया। आपके प्राण स्थिर हो जाएंगे। **प्राण**

को स्थिर करके उसके माध्यम से मन को स्थिर करना, इसे कहते है हठयोग और मन को स्थिर कर लेना एवं उसके माध्यम से प्राण को स्थिर कर लेना, इसे कहते है राजयोग। दोनो में से किसीको पकड़ो। गीताकार जो कि हमें संपूर्ण योग अर्थात् योग के सभी अंग सिखाते हैं, वे इन सब बातों का संकेत कर देते हैं।

''भ्रुवोर्मध्ये प्राणमावेश्य सम्यक् स तं परं पुरुषमुपैति दिव्यम्।'' भुकुटी के मध्य में प्राण को लाना। कैसे? अब यह तो योग की बात हो गई। इसलिए भगवद्गीता का जो साधन है, यह साधन आपको अच्छा लगे, कैसा लगे, देखिए। लेकिन यह साधन Holistic साधन है। यह सबको ले करके चलनेवाला साधन है। एक Holistic treatment होता है। ये सबको मिला करके करने वाला काम है; क्योंकि हमारे व्यक्तित्व में ये सारी बातें हैं। तो हर बात के लिए, उस-उस स्थान के लिये, जो बात कारगर होगी, उसका उपयोग कर लेना; यही तो अकल है।

योग हेतु सही आसन तथा शुचिता परमावश्यक

किसी एक बात का आग्रही बनना नहीं। जहाँ पर जिस बात से काम चलता हो, वहाँ उस बात को करना। इसलिए भगवान् इन दोनों बातों को मिला करके, हमारे सामने पंचम अध्याय के अंत का सूत्र ले करके, छठे अध्याय में प्रवेश करते समय, ध्यानयोग का वर्णन करते हुए कहते हैं, 'एकांत में चले जाओ, संयम का थोड़ा पालन करो, आसन के ऊपर बैठो, आसन को स्थिर कर लो'। कैसे स्थिर कर लो? समं काय शिरो ग्रीवं.........

शुचौ देशे प्रतिष्ठाप्य
स्थिरमासनमात्मन:।
नात्युच्छ्रितं नातिनीचं
चैलाजिनकुशोत्तरम्।(६/११)

स्थान पवित्र होना चाहिए, एकांत का होना चाहिए, उत्तम बात है। वह यदि साधकों की भूमि हो तो बहुत ही उत्तम; क्योंकि वहाँ की तरंगें अलग होती हैं। सभी स्थान समान नहीं होते। जहाँ पर जो क्रियाएँ अधिक समय तक होती हैं, वहाँ पर अपने आप उसी प्रकार की तरंगों का निर्माण हो जाता है।

हम लोगों को इस बात का पता चले न चले, लेकिन ज्ञानी सत्पुरुषों को इस बात का पता चल ही जाता है। हमारे सभी के शरीर से अलग-अलग प्रकार की गंध निकलती है। सबकी देह से निकलने वाली गंध अलग-अलग होती है। इसका पता चाहे हम लोगों को न चले, लेकिन पुलिस के कुत्तों को चलता है। एक कुत्ता कितने प्रकार की गंध जानता है, आपको पता है? दस हजार प्रकार की गंध पुलिस का एक कुत्ता जानता है। अब बात यह है कि हम सभी के शरीर से निकलने वाली गंध अलग-अलग है, अपने-अपने संस्कारों के अनुसार। यह एक बात। दूसरी बात- जहाँ पर बैठ करके हम रोज पूजा करते हैं, वहाँ का वायुमण्डल अलग होता है। जहाँ पर रसोई करते हैं, वहाँ का अलग होता है। हम जहाँ पर जो काम करेंगे, स्नान करेंगे, वहाँ का अलग होता है। इसलिए पूजा करते समय उठ करके बीच में बाथरूम में जा करके आना नहीं। वहाँ से आ गये, पूजा में बैठे तो पूजा में ही बैठना। उत्तम

आप यह अपने ऊपर प्रयोग कर सकते हैं। जब भी क्रोध आया, आप की सांस फूली। साँस को शांत रख करके आप चिढ़ करके बताइये। चिढ़ नहीं सकते। किसी भी विकार में प्राण की गति बढ़ जाती है। विकार है मन का और गति बढ़ गई प्राण की। प्राण की गति बढ़ गई, तो मन स्थिर नहीं हो सकता।

प्राण को स्थिर करके उसके माध्यम से मन को स्थिर करना, इसे कहते हैं हठयोग और मन को स्थिर कर लेना और उसके माध्यम से प्राण को स्थिर कर लेना इसे कहते है राजयोग। दोनों में से किसीको पकड़ो। गीताकार जो कि हमें संपूर्ण योग अर्थात् योग के सभी अंग सिखाते हैं, वे इन सब बातों का संकेत कर देते हैं।

बात तो यह ही होती है; क्योंकि आपको पता नहीं, हमारे ध्यान में नही आता; लेकिन वहाँ की वे तरंगें हमें चिपकती हैं। It is obvious, it is natural इसे कोई टाल नहीं सकता। और यह वास्तव में कितना सत्य है, यह यदि आपको जानना हो, तो हेलन केलर की जीवनी पढ़िएगा। विधाता ने उसको आँखें नहीं दीं। वो बोल नहीं सकती थी, लेकिन घ्राणशक्ति उसकी इतनी तीव्र थी कि जहाँ भी जाती, वहाँ का वातावरण कैसा है, वह सब बतला देती। तो फिर जो क्रिया जहाँ पर निरंतर चलती है, वहाँ का वायुमंडल वैसा बनता है। कोई भी रसोईघर में से उसके पास आया, ''आप रसोईघर में से आये,'' वह तुरंत बताती। उसके सैकड़ों प्रयोग हुए, एक भी फेल नहीं हुआ। उसकी जीवनी एक अलग ही बात है। हम लोगों को सीखने जैसा क्या है? जहाँ कहीं बैठ करके ध्यान नहीं होता। करना ही पड़े तो करना चाहिए! लेकिन उसे जल्दी सिद्ध करना है, तो उसका स्थान अच्छा होना चाहिए। पवित्र होना चाहिए।

यज्ञानां जपयज्ञोऽस्मि
शुचौ देशे प्रतिष्ठाप्य स्थिरमासनमात्मन:।

आसन भी अपना-अपना होना चाहिए। माला अपनी-अपनी होनी चाहिए; क्योंकि अपनी माला के साथ अपने संस्कार होते हैं। हम लोगों की मोटी बुद्धि में ये बातें आती नहीं।

''और फिर वहाँ पर बैठ करके'', भगवान् कहते हैं, ''अर्जुन, ध्यान का अभ्यास करना चाहिये। अब यहाँ पर, ध्यान का जो अभ्यास आया, अब इस ध्यान के अंतर्गत बहुत सारी बातें हैं। हठयोग आ गया, राजयोग आ गया; लेकिन जिस प्रकार मन को स्थिर करने के लिए प्राण का नियंत्रण उपयोगी होता है, उसी प्रकार **ध्यान करने के लिए जप भी उपयोगी होता है।** जप करते हुए ध्यान करने की योग्यता आती है। इसलिये एकदम आरंभ से ध्यान नहीं करना। आरंभ से ध्यान करेंगे; तो थोड़ी गड़बड़ी है। गड़बड़ी कैसी है?

संत श्री गुलाबराव महाराज, जिनको मैं संसार का सबसे बड़ा संत मानता हूँ, वो नि:शंक होकर एक बात कहते हैं कि आरंभ से ही ध्यान करेंगे, तो विकार ज्यादा बढ़ेंगे; क्योंकि ध्यान में चित्त एकाग्र होता है और अशुद्ध चित्त एकाग्र हो गया; तो अशुद्धता की बुद्धि होती है। विकार प्रबल होंगे। चित्त एकाग्र होना चाहिए; लेकिन चित्त शुद्ध भी होना चाहिए।

इसलिए चित्त को पर्याप्त रूप से शुद्ध करने के लिए ध्यान से पहले जप आवश्यक है। आपका ध्यान लगता है, नहीं लगता है Don't worry! जप का अभ्यास खूब करो। वह उपयोगी है, ऐसा भगवान् भगवद्गीता में कहते हैं।

जिस प्रकार मन को स्थिर करने के लिए प्राण का नियंत्रण उपयोगी होता है, उसी प्रकार ध्यान करने के लिए जप भी उपयोगी होता है। जप करते हुए ध्यान करने की योग्यता आती है। इसलिए एकदम आरंभ से ध्यान नहीं करना। आरंभ से ध्यान करेंगे; तो थोड़ी गड़बड़ी है। गड़बड़ी कैसी है?

संत श्री गुलाबराव महाराज, जिनको मैं संसार का सबसे बड़ा संत मानता हूँ, वे नि:शंक होकर एक बात कहते हैं कि आरंभ से ही ध्यान करेंगे, तो विकार ज्यादा बढ़ेंगे; क्योंकि ध्यान में चित्त एकाग्र होता है और अशुद्ध चित्त एकाग्र हो गया; तो अशुद्धता की बुद्धि होती है। विकार प्रबल होंगे। चित्त एकाग्र होना चाहिए; लेकिन चित्त शुद्ध भी होना चाहिए।

इसलिए उस चित्त को पर्याप्त मात्रा में शुद्ध करने के लिए ध्यान से पहले जप का महत्त्व है।

(अगले अंक में हम देखेंगे ध्यान में जप का महत्त्व तथा ध्यान की विधि।)

सफलता के स्वर्णिम सूत्र

हम यह अक्सर देखते हैं कि संसार में कई लोग हैं, जो सफलता की सीढ़ी-दर-सीढ़ी पार करते हुए उन्नति के शिखर पर पहुँच जाते हैं और कई ऐसे भी हैं, जो आजीवन कोई उल्लेखनीय उपलब्धि अर्जित नहीं कर पाते और हमेशा अपने भाग्य/दैव को कोसते रहते हैं। उनकी गिनती असफल लोगों में होती है।

अतः प्रश्न यह उठता है कि जीवन में सफलता प्राप्त करने का आधार क्या है? अथवा यह कहें कि वे कौन से कारण हैं, जो हमारी सफलता के मार्ग में बाधक बनते हैं?

विगत दिनों अपने जोधपुर प्रवास में प.पू. गुरुदेव ने इसी विषय पर अपने बहुमूल्य विचार व्यक्त किए थे- वे यहाँ दो भागों में पाठकों के लाभार्थ प्रकाशित किए जा रहे हैं :-

हमारे साथ कई बार ऐसा होता है कि बहुत सारा काम करने को शेष होता है अथवा बहुत कुछ पढ़ने- लिखने को पड़ा होता है; किंतु सामने पड़े काम अथवा लिखने-पढ़ने को हमारा मन ही नहीं करता। मन जाता है WhatsApp की ओर या और कहीं अन्यत्र। फलस्वरूप, हम काम को टालते रहते हैं और अवसर निकल जाता है तथा हम मिलनेवाले उचित लाभ से वंचित रह जाते हैं एवं बाद में पछताते हैं।

इसलिए सफलता का प्रथम सूत्र है आज का काम आज ही करना। कहा भी है, ''कल करे सो आज कर, आज करे सो अब। पल में परलय होयगी, फेर करेलो कब?''

अतः किसी कार्य में असफल होने का प्रमुख कारण है- हमारी **आलस्य की प्रवृत्ति**। इसी आलस्य के कारण मनुष्य अपने जीवन के बहुत बड़े-बड़े अवसरों को खो दिया करता है। 'योगवासिष्ठ' में भी आलस्य को सफलता के मार्ग का सबसे बड़ा शत्रु बतलाया गया है। यदि हम आलस्य का त्याग कर अपनी उन चुनी हुई बातों को; जिन्हें हम पूर्ण करना चाहते हैं, तुरन्त पूर्ण करने की ओर उद्यत हो जाते हैं और किसी भी प्रकार अपने शरीर, मन से आलस्य को चिपकने नहीं देते हैं, तो हमारा जो भी करियर है, उसमें हमें सफलता निश्चित रूप से प्राप्त होगी, इस में कोई संदेह नहीं। इस प्रकार जीवन की सफलता के मार्ग का प्रथम अवरोधक हुआ, **आलस्य**। हमारे शास्त्रों ने भी, 'आलस्यो मनुष्याणां शरीरस्थो महा रिपु'-कहकर हमें चेताया है।

सफलता के मार्ग का दूसरा अवरोध है,- अहंकार।

अहंकार के कारण भी हम अनेक बार, अपने जीवन में कई अवसर व्यर्थ ही गवाँ देते हैं। कई बार हमें जिनके साथ घुल मिलकर काम करना चाहिए, उनके साथ हम घुलते–मिलते नहीं तथा अहंकारवश अपनी वाणी को इतनी कठोर बना लेते हैं कि जो मनुष्य हमारे लिए कुछ कर सकता था, वह भी हमें सहयोग करने को तैयार नहीं होता।

यदि यह अहंकार हमारे भीतर से निकल जाए और कितने भी बड़े होने पर– हम एक छोटेसे व्यक्ति के रूप में अध्ययनशील बने रहें – जहाँ भी जिज्ञासा उत्पन्न हो, संबंधित व्यक्ति से जाकर पूछने जितनी विनम्रता हममें हो तथा जिसकी भी सहायता लेनी हो, उसकी सहायता लेने में हमें कोई हिचकिचाहट न हो, तो हमारा जीवन सफल होता जाता है, श्रेष्ठ होता जाता है। इससे हमें कोई नहीं रोक सकता।

नियमित स्वाध्याय आवश्यक है :–

अहंकार और आलस्य के अतिरिक्त तीसरा शत्रु बतलाया गया है– अज्ञान। यदि हमने अपने 'करियर' का चयन कर लिया है, तो उसमें सफलता प्राप्त करने हेतु नित्य स्वाध्याय आवश्यक माना गया है। भगवद्‌गीताकार कहते हैंः–

''अनुद्वेगकरं वाक्यं सत्यं
प्रियहितं च यत्।
स्वाध्यायाभ्यसनं चैव वाङ्मयं
तप उच्यते।।(१७!१५)

सामान्यतया हम अपने विषय की सामान्य जानकारी (ज्ञान) को ही पर्याप्त मानकर आगे अध्ययन बंद कर देते हैं। यह सही नहीं है। वस्तुत: हमें अपने चयनित क्षेत्र का हर–सम्भव (एक–एक) ग्रंथ पढ़ना चाहिए और उससे अधिक से अधिक ज्ञान प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए।

> यदि किसी ने पढ़ा नहीं है, ज्ञान अर्जित करने का प्रयास नहीं किया है, तो वह अपने क्षेत्र में पीछे रह जायेगा। जहां पर है वहीं पर रुक जाएगा । रुका हुआ ज्ञान, जीवन में जड़त्व उत्पन्न कर देता है। जैसे तालाब का पानी एक जगह स्थिर रहता है; जबकि नदी का जल रोज आगे बढ़ता रहता है, बदलता रहता है, प्रगति करता रहता है।

जैसा कि सभी जानते हैं, अत्यंत उपेक्षित वातावरण से बाहर निकलकर भी डॉक्टर आंबेडकर ने अपनी कैसी इमेज का निर्माण किया कि हम आज भी उन्हें समय–समय पर याद करते हैं ! इसका एक ही कारण था कि उन्होंने ज्ञानप्राप्ति के लिए जिस प्रकार प्रयास किया, वह ढंग अनोखा था। उन्होंने एक जन्म में जितना पढ़ लिया, उतना अन्य व्यक्ति ३ जन्मों में भी नहीं पढ़ पाएंगे! उन्होंने एक ही जन्म में न केवल उतना पढ़ा ही; अपितु उसे पचा भी लिया। जीवन के अंतिम दिन भी वे रात्रि में सोने से पूर्व अपने अंतिम ग्रंथ को लिखकर सोए और फिर नहीं उठे। यह उनका इतिहास है। उसका परिणाम यह था कि एक उपेक्षित–घर का बालक, जीवन में इतना बड़ा पराक्रम करके चला गया, जो स्वाध्याय का ही परिणाम था । 'So you must keep reading.' देखो , आज हर विषय के ज्ञान का असीम भंडार सहज ही उपलब्ध है। अत: ऐसा कभी मत मान लेना कि मैंने सब–कुछ पढ़ लिया है तथा अब कुछ भी जानने की जरूरत नहीं है। (और अक्सर हम यही सोच लेते हैं।) जब कि यह सच नहीं है।

मेडिकल क्षेत्र को ही लो, इसमें हर ६ माह में नई–नई खोजें होती रहती हैं। अत: हर अच्छे डॉक्टर को हमेशा अपडेट रहना चाहिए। रोज कुछ समय नई–नई जानकारियाँ प्राप्त करने हेतु देना चाहिए। अत: यदि किसी ने पढ़ा नहीं है, ज्ञान अर्जित करने का प्रयास नहीं किया है, तो वह अपने क्षेत्र में पीछे रह जाएगा। जहाँ पर है वहीं पर रुक जाएगा। रुका हुआ ज्ञान, जीवन में जड़त्व उत्पन्न कर देता है। जैसे

तालाब का पानी एक जगह स्थिर रहता है; जबकि नदी का जल रोज आगे बढ़ता रहता है, बदलता रहता है, प्रगति करता रहता है।

मनुष्य की विशेषता उसका नवीतम ज्ञान हैः–

मनुष्य का ज्ञान सदैव 'अपडेट' रहना चाहिए, वह निरंतर बढ़ता रहना चाहिए। ध्यान देने योग्य बात यह है कि इस ज्ञान को प्राप्त करने के दो ही साधन हैं–

या तो आपको पढ़ना चाहिए अथवा सुनना चाहिए। यदि पढ़ने अथवा सुनने से हमने अपना मुंह मोड़ लिया, तो इसका अर्थ यह समझना चाहिए कि मैंने अपने अंतरंग के विकास को रोक दिया। विज्ञान की जितनी कृपा हम लोगों पर आज है, उतनी कृपा हमारी पिछली पीढ़ियों पर नहीं थी। वास्तविकता यह है कि आज का छोटा बालक भी सर्वज्ञ है; क्योंकि सर्वज्ञ होने के साधन उसके पास मौजूद है। वह एक छोटासा कम्प्यूटर खोलता है (गूगलं शरणं व्रज) और किसी भी विषय को 'सर्च' करना आरम्भ करता है तो कौनसी ऐसी बात है कि जिसका पता वह नहीं लगा पाता?

एकाग्रता के अभाव में उपलब्ध ज्ञान का लाभ नहींः–

इस प्रकार ज्ञान तो बहुत उपलब्ध है; किंतु उससे भी क्या होता है? क्योंकि उसे प्राप्त भी तो मुझे ही करना पड़ेगा। यदि प्राप्त नहीं किया, तो मैं जीवन में आगे नहीं बढ़ सकता। क्यों? वह ज्ञान तो उपलब्ध है, लेकिन उसको ग्रहण करने हेतु जो एकाग्रता आवश्यक है, उसका उनके पास अभाव है। असफल लोगों का मन स्थिर नहीं रह पाता, वह भटकता रहता है; जबकि एकाग्रता मनुष्य के जीवन में बड़ी पूंजी है। मैं जिस किसी विषय में काम आरंभ करूंगा, उस विषय में एकाग्र होना आवश्यक होगा। भगवद्‌गीता के छठे अध्याय में चित्त को एकाग्र करने के गुर दिए गए हैं। चित का एकाग्र होना हमारी किसी भी प्रकार की शक्ति को उद्दीप्त करने की सबसे बड़ी आवश्यकता है।

स्वामी विवेकानंद जी एक बार विलियम जेम्स से मिलने गए। वे मनोविज्ञान के बहुत बड़े लेखक थे। स्वामी जी जब वहाँ पहुँचे, तो जेम्स भोजन कर रहे थे। स्वामीजी बैठ गए। जेम्स जब भोजन कर बाहर आए, तो स्वामीजी ने उनकी पुस्तकों में से ही कुछ उदाहरण देकर अपनी बात समझाना आरंभ किया। जेम्स आश्चर्य चकित होकर बोले,– ''यह पुस्तक आपने कब पढ़ी? यह तो अभी प्रकाशित होनी शेष है। स्वामीजी मुस्कुराए और कहा , ''यह यहाँ रखी थी, जो आपके आने तक मैंने इसे कुछ उलट–पुलट कर देख लिया।'' जेम्स बोले, ''इतना जल्दी आपने उसे कैसे देखा?'' तो स्वामीजी ने कहा, ''हम लोगों को हमारे बाल्यकाल में ही एकाग्र होने का अभ्यास करवाया जाता है। हमारे यहाँ ८ वर्ष का बालक प्राणायाम करता है, संध्या–वंदन करता है। इस प्रकार एकाग्र होने का गुर उसे स्वतः ही प्राप्त हो जाता है। चित्त की एकाग्रता जितनी अपने जीवन में होगी, उतना अपने करियर के लिए ज्ञान प्राप्त करना आसान होगा और आगे भी जाकर जो कुछ प्राप्त करना है वह सरल हो जाएगा; क्योंकि the focussing is important आज यही एकाग्रता व्यक्तियों के पास से चली गई है। अत: आज व्यक्ति एकाग्र हो नहीं पा रहा है। सफलता हेतु एक और प्रमुख आवश्यकता है संतुलित आहार–विहार की।

हमें यह भी समझना चाहिए कि मानसिक एकाग्रता के लिए अपने शरीर को स्वस्थ रखना आवश्यक है।इस सम्बंध में गीताकार कहते हैं,– जब तक आप अपने जीवन को संतुलित नहीं बनाते, अनुशासित नहीं करते, तब तक आप लंबे समय तक काम नहीं कर पाएंगे। इसलिए यदि हमें एक लंबा सफल जीवन जीना है तो उसका तरीका क्या है?

युक्ताहारविहारस्य
युक्तचेष्टस्य कर्मसु ।
युक्तस्वप्नावबोधस्य
योगो भवति दु:खहा ।।६/१७।।

गीताकार कहते हैं,– आपका उठना–बैठना, जागना–सोना, खाना–पीना, काम करना–विश्राम करना आदि सभी बातें अत्यंत अनुशासित होनी चाहिए; ये जिसकी जितनी अनुशासित होगी, उसका स्वास्थ्य उतना ही अच्छा रहेगा, उसका मन उतनी ही जल्दी एकाग्र भी हो सकेगा। साथ ही उसे दीर्घ जीवन का लाभ भी प्राप्त होगा।

अब ऐसा दीर्घ जीवन प्राप्त करने के लिए यदि अनुशासन का पालन आज नहीं करेंगे, तो आगे चलकर वे दिन आपको बीमारी में बिताने पड़ेंगे।

इसलिए यदि मनुष्य को अपना

जीवन सफल बनाना है, तो अपने 'शरीर' नाम के इस साधन को नीरोग रखना पड़ेगा तथा साथ ही उसे अपने साथ के लोगों के साथ अपना व्यवहार भी ठीक रखना पड़ेगा। अनुशासन की जो बात मैंने कही, संतुलन की बात कही– वह संतुलन की बात केवल व्यायाम आदि के लिए ही नहीं है; अपितु वे अन्य व्यक्तियों के साथ हमारे संतुलित व्यवहार से भी संबंधित हैं। अपने साथियों के साथ हम कैसा व्यवहार करें, कैसे बात करें आदि। (व्यावहारिक; किन्तु सफलता अर्जन की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं पर अगले अंक में चर्चा करेंगे।

mmm

शेष पेज १९ का... ***(मीमांसा-शास्त्र के आलोक में गीता दर्शन)***

एक होना ही सब कुछ, फिर कुछ नहीं।

उपक्रम में जहाँ का उल्लेख उपसंहार में ठीक वहाँ तक लाए।

फल :–

गीता क्या देती है? तो कहना होगा.. 'ज्ञानोत्तर अद्वैत भक्ति।' तुकाराम महाराज कहते हैं, .. तुका झालासे पांडुरंगपर भक्ति के लिए द्वैत चाहिए। यही भगवान् शंकराचार्य अपनी 'षट्पदी' में कहते हैं। ज्ञानेश्वर महाराज, अपने 'अमृतानुभव' में इस अद्वैत भक्ति के लिए कहते हैं। जैसे एलोरा में एक ही शिलाखण्ड में से शिवजी का पूरा परिवार बनाया गया है, वैसे मैं और भगवान् एक होते हुए भी भक्ति में आमने-सामने हो सकते हैं। ''परिवारू कीजे कोरूनी डोंगरू, तैसा भक्तिचा व्यवहारू कां न व्हावा!''

ज्ञानेश्वर महाराज कहते हैं, आनंदस्वरूप आत्मतत्त्व के साथ जो रसोल्लास है, उसे शब्द में नहीं कह सकते। जैसे रसगुल्ले की मिठास, यह अनुभव की बात है, इसे शब्दों में वर्णन नहीं किया जा सकता।

स्थूल से सूक्ष्म की ओर जाते हैं, तो पंचकोशों की यात्रा होगी, जो गीता ने कराई है। यह यात्रा अत्यंत मनोहारी है। गीता अंततः जीवनमुक्ति तक पहुँचाती है। ''मामेकं शरणं-व्रज'' में विलय। थेंबुटा सागरी मिळाला। बूँद सागर में घुल गयी।

गीता में जहाँ हर प्रकार से भक्ति का प्रतिपादन है, वहाँ हमें अंत में ज्ञानाधिष्ठित सत्कर्मशील भक्तिमय दिव्य जीवन योग देती है। कोई ज्ञान की, कोई अनासक्ति की, कोई योग की बात करते हैं, परंतु यह निश्चित है कि गीता आत्मसात करने से सत्कर्म करने का स्वभाव होगा, भक्ति से साक्षात्कार के बाद दिव्य जीवन होगा। गीता वन में जाकर संन्यास की बात नहीं करती, जैसा कभी इसे त्याग का ग्रंथ माना जाता था, गीता पुरुषार्थयुक्त जीवन सिखाती है। अतः जीवन का दैवी सम्पत्ति युक्त उन्नयन करती है।

अभ्यास :–

मनुष्य का जीवन सद्गुणसंपन्न होता जाए, जिससे वह जीवन का उन्नयन करे और ज्ञानाधिष्ठित सत्कर्मशील भक्तिमय जीवन को प्राप्त हो। इसलिए गीता में सद्गुणों की चर्चा बार-बार की गई है।

दूसरे अध्याय के अंतिम अठ्ठारह श्लोक स्थितप्रज्ञ के लक्षण बताते हैं तथा बारहवें अध्याय में तेरहवे से उन्नीसवें श्लोक तक सद्गुणों की सूची है।

साथ ही तेरहवें अध्याय में ज्ञानी के लक्षण हैं। चौदहवें में गुणातीत की ओर जाने के लिए पहले सत्त्व, रज, तम को बताया है, तब इनसे आगे जाने के लिए गुणातीत के लक्षण बताए हैं एवं सोलहवां अध्याय हमें दैवी संपत्ति किन-किन गुणों से है, बताकर उनके लिए प्रेरित करती है। साथ में आसुरी, तामसी गुण कौनसे हैं, यह बताकर वेदना हममें न हो इस हेतु सजग करती है।

गीता हमें कुछ करने के पहले उस योग्य बनाती है, तत्पश्चात् हम क्या कर सकते हैं, हमें क्या करना चाहिए, यह बताती है।। (क्रमशः)

(पाठक अगले अंक में शेष लक्षण यथा..अपूर्वता, अर्थवाद एवम उपपत्ति के विषय में पढ़ेंगे।)

ॐ
।। वेदाः सर्वहितार्थाय ।।

महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान
वार्षिक कार्यनिवेदन - २०१७-२०१८

सन्माननीय सदस्यगण
सादर जय श्रीकृष्ण!

मंगलमय श्री भगवान् के पवित्र चरणकमलों में विनम्र वंदन करते हुए सर्वांतर्यामी प्रभु के समक्ष 'महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान' के सत्ताईसवे वर्ष का यह कार्य विवरण प्रस्तुत करते हुए मैं प्रसन्नता का अनुभव कर रहा हूँ। महर्षि वेदव्यासजी के कृपाशीर्वाद से सतत संवर्धमान यह वेदसेवाकार्य इस विश्व के संस्कृतिप्रेमी जनता-जनार्दन के सर्वविध भरसक सहयोग बलपर दृढ़मूल हो गया है। अत: पारदर्शिता के आधुनिक मूल्य को चरितार्थ करते हुए प्रति वर्षानुसार महर्षि वेदव्यासजी के चरणों में एवं जनता-जनार्दन के सम्मुख गत वर्ष की गतिविधियों का एवं उस उपलक्ष्य में किये गये आय-व्यय का संक्षिप्त विवरण रखना यह महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान अपना पवित्र कर्तव्य मानता है।

(१) वेदाध्ययन :

प्रतिष्ठान का आद्य एवं नींवरूप लक्ष्य है वेदोंका आचारसंपन्न छात्रोंद्वारा कंठस्थीकरण। गत वर्ष सभी वेदविद्यालयों में यह भली भाँति प्राप्त किया गया। किंतु इससे आगे जाकर प्रतिष्ठान के छात्र समाज का सांस्कृतिक नेतृत्व भी कर सकें इस हेतु उन्हें भाषाएँ, संगणक, विज्ञान, इतिहास आदि विषयों से भी अवगत कराया गया। साथ में आधुनिक प्रबंधन की दृष्टि से भी परिपूर्णता की ओर बढ़ने का प्रयास जारी है।

अतीव प्रसन्नता की बात है कि वेदशिक्षा के क्षेत्र में पिछले २७ वर्षों के अनुभव के बल पर महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान ने एक अनुकरणीय प्रतिमान प्रस्तुत किया है जो दिन प्रतिदिन अधिकाधिक स्वीकृति पा रहा है। गत केवल एक वर्ष में प्रतिष्ठान द्वारा प्रेरित तीन वेदविद्यालय इसका प्रमाण हैं।

(२) विश्वविद्यालयीन परीक्षा :-

कवि कुलगुरु कालिदास विश्वविद्यालय, रामटेक की वर्ष २०१८ की परीक्षा के लिये इस वर्ष वेदाध्ययनरत कुल ११३ छात्रों ने आवेदन भेजे हैं, जिसमें प्रवेशिका ३३,

महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान - न्यासी मंडल २०१६-२०१९

-: पदाधिकारी :-

संस्थापक एवं अध्यक्ष - प. पू. स्वामी श्री गोविंददेवगिरि जी महाराज, पुणे।
उपाध्यक्ष- श्री. भागीरथजी लड्डा, मुंबई। **मंत्री -** श्री. राजेशजी मालपाणी, संगमनेर।
कोषाध्यक्ष - श्री. राजगोपालजी मिणियार, सोलापुर, **सहमंत्री -** श्री. चंद्रकांतजी केले, धुलिया।

-: न्यासी :-

श्री. रामेश्वरलालजी काबरा (मुंबई)	श्री. गौरीशंकरजी झंवर (कोलकाता)	वे. मू. श्री. श्रीकृष्णजी पळसकर (परभणी)
श्री. रमेशजी रामू (पुणे)	श्री. दगडूलालजी बाहेती (पुणे)	वे.मू.श्री. सुजितजी देशमुख (पुणे)
श्री. राजकुमारजी अग्रवाल (पुणे)	श्री. बाबूलालजी तोष्णीवाल (सोलापुर)	श्री. हर्षदभाई शाह (मुंबई)
श्री. जयप्रकाशजी बिहाणी (सेलु)	डॉ. सौ. भाग्यलता पाटसकर (पुणे)	श्री. अरुण कुमारजी भांगडिया (हैदराबाद)
प्रा. श्री. दत्तात्रयजी काले (पुणे)	डॉ. श्री. प्रकाशजी सोमण (पुणे)	श्री. गोविंदजी माहेश्वरी (कोटा)
श्री. कृष्णकांतजी रासकर (पुणे)	वे. मू. श्री. महेशजी नंदे (पुणे)	श्री. ओमप्रकाशजी पोरवाल (मुंबई)
श्री. विनीतजी सराफ (नई दिल्ली)		

छात्र, अध्यापक आदि की जानकारी

दि. ३१ मार्च २०१८ को समाप्त वर्ष में वेदविद्यालयों की संख्या निम्नानुसार ३४ हो गई है।

क्र.	वेदविद्यालय	अध्यापक	छात्र	वेदशाखा
१	श्री सद्‌गुरु निजानंद महाराज वेदविद्यालय, आलंदी	०५	३७	शुक्ल यजुर्वेद (माध्यंदिन)
२	श्री समर्थ संत महात्माजी वेदविद्यालय, ढालेगाव	०५	५५	
३	श्री चतुर्वेदेश्वर धाम, सावरगांव (महाराष्ट्र)	०३	२२	
४	जय जगदंबा वेदविद्यालय, खामगांव (महाराष्ट्र)	०१	०७	शुक्ल यजुर्वेद (माध्यंदिन)
५	ब्रह्मासावित्री वेदविद्यापीठ, पुष्कर (राजस्थान)	०७	९१	शुक्ल यजुर्वेद (माध्यंदिन)
६	श्री महर्षि दधीचि वेदविद्यालय, गोठमांगलोद (राजम)	०१	१०	पौरोहित्य शुक्ल यजुर्वेद (माध्यंदिन)
७	श्रीराम वेदविद्यालय, धुलिया (महाराष्ट्र)	०१	१६	पौरोहित्य शुक्ल यजुर्वेद (माध्यंदिन)
८	श्री गौरांग वेदविद्यालय, कोलकाता(प. बंगाल)	०३	४५	शुक्ल यजुर्वेद (माध्यंदिन एवं काण्व)
९	वैदिक पौरोहित्य पाठशाला, जिंतुर (महाराष्ट्र)	०१	१४	शुक्ल यजुर्वेद (माध्यंदिन)
१०	समन्वय वेदविद्यालय, हरिद्वार (उत्तरांचल)	०१	११	शुक्ल यजुर्वेद (माध्यंदिन)
११	संत गुलाबराव महाराज गुरुकुल, बेलोरा	०१	१२	शुक्ल यजुर्वेद (माध्यंदिन)
१२	स्वामी सत्यमित्रानंद वेदविद्या केंद्र, सूरत (गुजरात)	०१	०८	शुक्ल यजुर्वेद (माध्यंदिन)
१३	योगेश्वर याज्ञवल्क्य वेदविद्या प्रतिष्ठान, सराई (औरंगाबाद- महाराष्ट्र)	०२	१५	शुक्ल यजुर्वेद (माध्यंदिन)
१४	संत ज्ञानेश्वर वेदविद्यालय, वृंदावन (उत्तर प्रदेश)	०२	२३	शुक्ल यजुर्वेद (माध्यंदिन)
१५	वे.मू. विश्वनाथ देव गुरुकुल, वाराणसी, (उत्तर प्रदेश)	०१	१७	शुक्ल यजुर्वेद (माध्यंदिन)
१६	श्री ओंकारानंद गायत्री वेदविद्यालय, ऋषिकेश (उत्तरांचल)	०१	३०	शुक्ल यजुर्वेद (माध्यंदिन)
१७	श्री जयेंद्र सरस्वती गुरुकुलम्, सूडी (कर्नाटक)	०१	०४	शुक्ल यजुर्वेद (माध्यंदिन) एवं अथर्ववेद
१८	आचार्य वेदशास्त्र पाठशाला, परभणी (महाराष्ट्र)	०१	१०	न्याय एवं मीमांसा
१९	महाराजा प्रतापसिंह वेदविद्यालय, जम्मू (जम्मू-कश्मीर)	०२	१९	शुक्ल यजुर्वेद (माध्यंदिन)
२०	मणिपूर वेदविद्यापीठ, चार हजारे (मणिपूर)	०२	२५	शुक्ल यजुर्वेद (माध्यंदिन)
२१	श्री विक्रम विनायक वेदविद्यापीठ, बिर्ला मंदिर (रेवदंडा) (महाराष्ट्र)	०३	३५	शुक्ल यजुर्वेद (माध्यंदिन) एवं ऋग्वेद
२२	स्वामी प्रकाशानंद वेदविद्यालय कनखल (उत्तराखंड)	०१	१०	शुक्ल यजुर्वेद (माध्यंदिन)
२३	श्रुति-स्मृति वेदविद्यापीठम्, त्र्यंबकेश्वर (महाराष्ट्र)	०१	२०	शुक्ल यजुर्वेद (माध्यंदिन)
२४	संत गुलाबराव महाराज वैदिक महाविद्यालय, आलंदी (महाराष्ट्र)	०४	१५	शुक्ल यजुर्वेद
२५	श्रीकृष्ण वेदविद्यालय, पानिपत (हरियाणा)	०१	१३	शुक्ल यजुर्वेद (माध्यंदिन)
२६	श्रीमति गायत्रीदेवी वेदविद्यालय, अंजार (गुजरात)	०२	२२	शुक्ल यजुर्वेद (माध्यंदिन)
२७	स्वामी गोविंददेवगिरि वेदविद्यालय, वाघोदिया (गुजरात)	०२	१५	शुक्ल यजुर्वेद (माध्यंदिन)
२८	जीवनज्योती वेदविद्यालय, पिरंगुट	०२	२०	शुक्ल यजुर्वेद (माध्यंदिन)
२९	श्री विनायक वेदपीठम्, मेढा गांव, वसई (महाराष्ट्र)	०२	०६	शुक्ल यजुर्वेद (माध्यंदिन)
३०	देवी अहिल्या वेदविद्यालय, इंदौर (मध्य प्रदेश)	०१	१३	शुक्ल यजुर्वेद (माध्यंदिन)
३१	बुलढाणा अर्बन वैदिक गुरुकुल, बुलढाणा (महाराष्ट्र)	०१	२२	शुक्ल यजुर्वेद (माध्यंदिन)
३२	स्वामी स्वरुपानंद वेदविद्यालय नरसोबाची वाडी, कोल्हापुर (महाराष्ट्र)	०१	०६	शुक्ल यजुर्वेद (माध्यंदिन)
३३	श्री हरिहर पौरोहित्य वेदविद्यालय, बेलापुर (महाराष्ट्र)	०१	०७	शुक्ल यजुर्वेद (पौरोहित्य)
३४	संत नामदेव महाराज वेदविद्यालय, औंढा नागनाथ (महाराष्ट्र)	०१	०४	शुक्ल यजुर्वेद (माध्यंदिन)
	कुल	**६५**	**६७९**	

कनिष्ठ पदविका ४१, ज्येष्ठ पदविका ३९, तथा बी.ए. इन वैदिक स्टडीज प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय वर्ष हेतु २० छात्र हैं। इस हेतु अध्यापक, व्यवस्थापक, कर्मचारियों का पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ।

(३) परीक्षा परिणाम :–

वेदविद्या प्रवेशिका, कनिष्ठ तथा ज्येष्ठ पदविका परीक्षाओंके परिणाम प्राप्त हो चुके हैं। ७६ छात्र प्रथम श्रेणी एवं ११ छात्र द्वितीय श्रेणी प्राप्त कर उत्तीर्ण हुए हैं। २६ छात्र अनुत्तीर्ण हुए हैं। 'बीए इन वैदिक स्टडीज' परीक्षाओंमें १५ छात्र उत्तीर्ण हुए हैं।

(४) महर्षि सांदीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन से प्राप्त अनुदान :–

इस संस्था की योजना के अंतर्गत आलंदी, ढालेगांव, सावरगांव तथा पुष्कर वेदविद्यालयों हेतू पूर्ण तथा कोलकाता, हरिद्वार, वाराणसी, ऋषिकेश, जम्मू, तथा मणिपुर वेद विद्यालयों के लिए छात्रवृत्ति तथा अध्यापक मानधन हेतु अनुदान राशि प्राप्त हुई है।

(५) उद्दिष्टपूर्ति निमित्त व्यय

क्र.	व्यय	रु. (लाखों में)
१)	कार्यालय एवं अन्य व्यय	**१९.४५**
२)	उद्दिष्टपूर्ति व्यय	**१८०.४६**

(६) प्रतिष्ठान की विविध योजनाओं में समाज का सहयोग – प्रतिष्ठान को विविध योजनाओं में दिनांक ०१.०४.२०१७ से ३१.०३.२०१८ तक निम्नानुसार सहयोग प्राप्त हुआ।

क्र.	योजना/कोष	प्राप्त राशि (रु. लाखों में)
१)	वेदश्री तपोवन कोष	६१.३८
२)	माधुकरी दत्तक योजना	१३.८३
३)	श्री सद्गुरु निजानंद महाराज वेदविद्यालय आलंदी कोष	७.१२
४)	ऋषिकुमार	८.३८
५)	साधारण एवं अन्य अनुदान	७८.०७
६)	श्रीकृष्ण वेदविद्यालय, पानिपत	४.००
७)	स्वामी सत्यमित्रानंद वे.वि., सुरत	१.२२

धनसंग्रह का मुख्य स्रोत प.पू. आचार्यश्री द्वारा वैदिक संस्कृति रक्षण एवं संवर्धन हेतु आयोजित कथाओं का माध्यम ही रहा है। इन माध्यमों को सफल बनाने में वेदप्रेमी बंधु, कार्यकर्ता एवं समाज का अच्छा योगदान प्राप्त हो रहा है।

(७) धर्मश्री त्रैमासिक प्रकाशन :–

धर्मश्री परिवार का त्रैमासिक वार्तापत्र ''**धर्मश्री**'' नियमित रूप से श्रीकृष्ण सेवानिधि के माध्यम से प्रकाशित हो रहा है। लगभग ९,५०० दानदाता, वेदप्रेमी व्यक्ति एवं प. पू. आचार्यश्री के दीक्षार्थियों को 'धर्मश्री' अंक भेजे जाते हैं।

(८) गुरुपूर्णिमा उत्सव :–

परंपरा के अनुसार 'गुरुपूर्णिमा' उत्सव दिनांक १८ जुलाई २०१७ को स्वर्गाश्रम, ऋषिकेश, उत्तराखंड में प. पू. आचार्यश्री के सान्निध्य में भगवान् वेदव्यासजी का पूजनोत्सव हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुआ।

(९) २०१७–२०१८ की महत्त्वपूर्ण घटनाएँ :–

१) दि. १५ जुलाई २०१७ को इंदौर, (मध्यप्रदेश) में देवी अहिल्या वेदविद्यालय का शुभारंभ।

२) पंढरपुर कथा में चि. विजय शर्मा, वाराणसी तथा चि. प्रमोद कुलकर्णी, आलंदी को सुवर्ण कंकण एवं चि. उज्वल पाठक, आलंदी को सुवर्ण मुद्रिका पुरस्कार से गौरवान्वित किया गया।

३) दि. २५ सितंबर २०१७ को नरसोबाची वाडी, जि. कोल्हापुर में स्वामी स्वरुपानंद वेदविद्यालय का शुभारंभ।

४) दि. ०५ अक्तुबर २०१७ को दिल्ली के डॉ. एस.पी.एम. सिविक सेंटर सभागार में मा. डॉ. श्री. मोहनजी भागवत, मा. श्री. आदित्यनाथजी मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश एवं प.पू. स्वामी गोविंददेव गिरिजी महाराज की उपस्थिति में ''भारत में संचालित सर्वोत्कृष्ट वेदविद्यालय'' के रूप में सिंघल फाउंडेशन, उदयपुर द्वारा चयनित ''श्री समर्थ संत महात्माजी वेदविद्यालय'', ढालेगांव को एवं ''सर्वोत्कृष्ट वैदिक छात्र'' के रूप में चयनित चि. सागर शर्मा को सम्मानित किया गया।

५) प्रतिष्ठान के पूर्व न्यासी डॉ. श्री. रवीन्द्रजी मुले को अखिल भारतीय विद्वत् परिषद द्वारा ''विद्वत् भूषण'' पदवीसे अलंकृत किया।

६) दि. २३ जनवरी २०१८ को प.पू. स्वामी गोविंद देव गिरिजी के जन्मस्थान, बेलापुर में ''श्री हरिहर पौरोहित्य वेदविद्यालय'' का एवं महाराष्ट्र के हिंगोली जिले में स्थित औंढा नागनाथ में ''संत नामदेव महाराज वेदविद्यालय'' का शुभारंभ।

७) महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान के ''श्री सद्गुरु निजानंद महाराज वेदविद्यालय'', आलंदी का २६ वां वार्षिकोत्सव दि. १० फरवरी २०१८ को प.पू. स्वामीजी तथा गणमान्यवरों की उपस्थिति में संपन्न।

(१०) सत्ताईस वर्षों के वेदसेवा कार्य :–

इस पवित्र एवं राष्ट्रीय कार्यनिमित्त विगत सत्ताईस वर्षों में भारत वर्ष के २२ प्रांतों की १५५ से अधिक वेदपाठशालाओं से, ३७९० से अधिक वैदिक छात्रों से तथा ८७५ से अधिक वैदिक पंडितों से कार्यपरिचय हुआ। २६ श्रेष्ठ वैदिक विद्वानों को **'महर्षि वेदव्यास पुरस्कार'** से सम्मानित किया गया। वैदिक छात्रवृत्ति, युवा वैदिक परिरक्षण योजना, वृद्ध वैदिक निवृत्ति दक्षिणा तथा वेदविद्यालय अनुदान योजना से प्रत्यक्ष लाभान्वितों का विवरण निम्नानुसार है।

वर्ष	छात्र	लाभान्वित		वेदपाठशालाएं		कुल व्यय रु. (लाखो में)
		अध्यापक	अन्य वैदिक	संलग्न	अनुदानित	
वर्ष १९९१–९२ से २००९–१० तक						**६५५.११**
वर्ष २०१० – ११	३८१	३४	१८	१९	०४	८९.१०
वर्ष २०११ – १२	४०५	३९	१७	२२	०४	१०२.८८
वर्ष २०१२ – १३	४६९	४४	१७	२२	०४	१०८.४५
वर्ष २०१३ – १४	४९७	४५	१३	२३	०१	१०६.०३
वर्ष २०१४ – १५	४९३	४१	१२	२३	०१	१७०.६२
वर्ष २०१५ – १६	५०६	५०	१२	२६	०१	१६८.८७
वर्ष २०१६ – १७	५६३	५३	१२	२७	०१	१६८.११
वर्ष २०१७ – १८	६७९	६५	१२	३३	०१	१८०.४६
				कुलव्यय लाख रु.		**१७४९.६३**

धन्यवाद ज्ञापन :–

न्यास की इस वर्ष की संतोषजनक कार्यवृद्धि, अध्यापक, दानदाता, हितचिंतक, सभी समितियों के सदस्यगण, प्रतिष्ठान के न्यासी सदस्य, कार्यकर्ता, कार्यतत्पर कार्यालयीन बंधु तथा सभी कार्यकलापों में विभिन्न रूपों में सहभागी असंख्य भाई-बहनों के सहयोग के कारण ही संभव हो सकी है। इन सभी के प्रति हार्दिक धन्यवाद एवं अभिनंदन!

राजेश मालपाणी
(मंत्री)

पुणे दिनांक: १५ जुलाई २०१८

(११) प्रतिष्ठान के हिसाब

आय व्यय पत्रक
०१/०४/२०१७ से ३१/०३/२०१८ तक का

व्यय	रकम	आय	रकम
प्रापर्टी संबंधी व्यय	४१,४९०	सावधि जमा राशि पर ब्याज	१,५३,७०,४६९
कार्यालयीन/अन्य व्यय	१९,०३,६९३	साधारण अनुदान	८६,४५,६९८
उद्देश्यपूर्ति व्यय	१,८०,४६,२४९	अन्य आय	६१,४८५
व्यय से आय अधिक	४०,८६,२२०		
कुल रुपये	**२,४०,७७,६५२**	**कुल रुपये**	**२,४०,७७,६५२**

तुलन पत्रक
दि. ३१ मार्च २०१८ की स्थिति

देयताएं	रकम	पूँजी	रकम
स्थायी कोष	३,१२,११,७०६	चल/अचल संपत्ति	३,७०,८२,९४५
विशेष कोष	२३,२३,८९,५२३	विनियोग	२२,२५,०७,४२६
नैमित्तिक देयताएं	९,६०,६२०	अग्रिम राशि	४०,५८,१२७
आय व्यय लेखा	८,२२,२९५	नकद एवं बँक बैलन्स	१७,३५,६४७
		आय व्यय लेखा	–
कुल रुपये	**२६,५३,८४,१४५**	**कुल रुपये**	**२६,५३,८४,१४५**

जाँचा व सही पाया
मर्दा अँड असोसिएटस् (चार्टड अकौंटंटस्)
पी. बी. मर्दा, प्रोप्रायटर

भागीरथ लड्ढा (उपाध्यक्ष)
राजेश मालपाणी (मंत्री)
राजगोपाल मिणियार (कोषाध्यक्ष)

।। श्रीहरिः ।।

प.पू. स्वामी श्री गोविंददेव गिरि जी महाराज के

* आगामी कार्यक्रम * ई. स. २०१८-२०१९

दिनांक	स्थान	कार्यक्रम
१०–१० से १७–१०	पुणे (महाराष्ट्र)	नवरात्रि अनुष्ठान
२५–१० से २७–१०	वृंदावन (उत्तर प्रदेश)	भागवत योग शिविर
२९–१० से ३१–१०	सोलापुर (महाराष्ट्र)	वाग्यज्ञ
०१–११ से ०२–११	परभणी (महाराष्ट्र)	प्रवचन
०३–११ से ०७–११	पुणे (महाराष्ट्र)	दीपावलि पर्व
१०–११ से १३–११	संगमनेर (महाराष्ट्र)	वेद अध्यापक संवाद
१४–११ से २०–११	संगमनेर (महाराष्ट्र)	श्री हनुमान कथा
२६–११ से २९–११	जयसिंगपुर (महाराष्ट्र)	श्री गणेश कथा
३०–११ से ०७–१२	मुंबई (प्रेमपुरी)	भागवत कथा
१०–१२ से १३–१२	मुंबई, गिरगाव (महाराष्ट्र)	प्रवचनमाला
१६–१२ से २२–१२	कोलकाता (प. बंगाल)	महाभारत संदेश कथा
२४–१२ से ०१–०१–१९	लोनावला, पुणे (महाराष्ट्र)	देवी भागवत कथा
०४–०१ से ०५–०१	पुणे (महाराष्ट्र)	योग महोत्सव
०६–०१ से ०८–०१	इंदौर (म.प्र.)	प्रवचन
०९–०१ से १५–०१	गोहाटी (आसाम)	श्रीकृष्णलीला कथा
२०–०१ से २६–०१	प्रयाग कुंभ (उ.प्र.)	दत्तपुराण/हनुमान कथा
२५–०१ से ३१–०१	प्रयाग कुंभ (उ.प्र.)	गीता परिवार प्रस्तुति (रात्रि)
१२–०२ से १८–०२	सोलापुर (महाराष्ट्र)	भागवत कथा
१९–०२ से २०–०२	परभणी (महाराष्ट्र)	संत समागम
२०–०२ से २६–०२	सावरगाव, जालना (महाराष्ट्र)	भागवत कथा

विशेष स्थिति में कार्यक्रम में परिवर्तन की संभावना रहती है।

शेष पेज ११ का... ***भारतरत्न स्व. अटल बिहारी वाजपेयी, जीवन दर्शन***

राजनैतिक परिदृश्य में आप लगभग १० वर्षों से ओझल रहे। भारत को सफल नेतृत्व देने वाले प्रधानमंत्रियों में अग्रगण्य माननीय श्री. अटल बिहारी वाजपेयी जी ने ९३ वर्ष की आयु में १६ अगस्त, २०१८ को दिल्ली के एम्स अस्पताल में अंतिम सांस ली। डॉक्टरों के अनुसार आपका निधन निमोनिया और अंगविकलता के कारण हुआ। धर्मश्री परिवार की और इस राष्ट्रपुरुष को भावपूर्ण श्रद्धांजलि। भगवान् इन्हें अपने दिव्यलोक में स्थान देवें, यह प्रार्थना।

महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान - दानदाता सूची

(दिनांक ०१/०४/२०१८ से दिनांक ३०/०६/२०१८ तक)

१ लाख एवं उससे अधिक

ठाणे: मे. सरला बसंत बिर्ला परमभक्ति ट्रस्ट, **बेलगांव:** श्रीमती अस्मिता पवार, **हरिद्वार:** श्रीमती मंगला विनायक खनके, **कोलकाता:** मे. कोटरीवाला सेवा निधि, **गुडगांव:** डॉ. श्री. सत्येंद्रकुमारजी, **पुणे:** मे. स्टरलाईट टेक फाउंडेशन

रु. ५० हजार से १ लाख

जोधपुर: मे. लीला फाउंडेशन, **नागपुर:** श्री. अविनाशजी संगमनेरकर

रु. २५ हजार से ५० हजार

चेन्नई: श्री. बन्सीलालजी राठी, **हैदराबाद:** श्री. जोशी परिवार, **लातूर:** श्री. विजयकुमारजी मालू

रु. १० हजार से २५ हजार

जोधपुर: मे. देहरादून कॅल्शियम मिनरल्स प्रा. लि. **पुणे:** श्रीमती गीताबई छोटेलाल खंडेलवाल, **नई दिल्ली:** श्रीमती मंजुला शर्मा, **खरसिया:** श्री. पालुरामजी अग्रवाल, **मुंबई:** श्री. बनवारीलालजी माहेश्वरी, **कोटा:** श्री. उपेंद्रनाथजी माहेश्वरी, श्रीमती कुसुमलता गहलोत, श्री. अरुणजी केजरीवाल, श्री. हिरालालजी मित्तल, **रायगड:** श्री. एवं श्रीमती गौरीशंकरजी नरेडी, **कानपुर:** श्री. विजयशंकरजी गुप्ता, **दिल्ली:** श्रीमती सीतादेवी काबरा, श्रीमती रेनू शर्मा, **लखनऊ:** डॉ. श्री. विष्णूजी श्रीवास्तव, **कोलकाता:** श्री. के.के. बांगड एवं परिवार, श्री. मदन मोहन जी मोहता एवं परिवार, श्रीमती प्रेमलता मल्ल, **नॉयडा:** श्रीमती संध्या मुद्‌गल एवं परिवार, श्रीमती शिल्पी मुद्‌गल, **रायसेन:** श्रीमती विमला झंवर, **अहमदाबाद:** श्री. राजेशजी माहेश्वरी, **भोपाल:** श्री. महेंद्रकुमारजी झंवर, **रांची:** श्री. रोहितजी तुलस्यान परिवार, श्रीमती उमा तुलस्यान, **डालटनगंज:** श्री. प्रभातकुमारजी तुलस्यान, श्रीमती उर्मिला खेतान, **गुडगांव:** श्री. सत्यनारायणजी सपफर, **रायपुर:** श्रीमती संगीता, **जोधपुर:** श्रीमती कौशल्या देवीडागा, **औरंगाबाद:** श्री. सत्यनारायणजी जाजू परिवार, श्री. सुरेशजी पाठक, श्री. राजेंद्रजी मुंदडा, मे. औरंगाबाद जिला माहेश्वरी सभा, **पुणे:** श्री. श्रीपादजी देशमुख, श्री. सुरेंद्रजी सावले, **हैदराबाद:** श्री. राजगोपाल शारदादेवी परतानी चॅरि. ट्रस्ट, **सहारनपुर:** श्रीमती रीटा गोयल, **अहमदनगर:** श्री. वैद्य परिवार, **बेलापुर:** श्री. मनोजजी झंवर, श्री. कृष्णाजी झंवर, **चंद्रपुर:** श्री. शरदजी लड्डा, **जमशेदपुर:** श्री. उत्तमचंदजी देबुका, **भिलवाडा:** श्री. जगदीशप्रसादजी सोमाणी

रु. ५ हजार से १० हजार

पुणे: श्रीमती उषा सिन्हा, श्री. रमेशजी गोपाले, श्री. प्रकाशजी शिर्के, श्री. सुहासजी निबंधे, सौ. संगीता मालपाणी, श्री. दुर्गादासजी देशमुख, श्रीमती सुजाता शिंगवेकर, श्री. अशोकजी एवं श्रीमती मंजू पुरोहित, श्री. उदयजी, श्री. श्रीनाथजी जोशी, श्री. लक्ष्मणजी जोशी, श्रीमती प्रगति देवकर, श्री. प्रल्हादजी चक्करवार, श्री. वीरेंद्रजी देशमुख, **कोटा:** श्रीमती विनय जोशी, श्री. रवि गर्ग, श्री. विनोदकुमारजी लिल्हा, श्री. किशनलालजी चौधरी, श्रीमती सुनीता अग्रवाल, डॉ. श्री. राकेशचंद्रजी अग्रवाल, श्री. नितिनजी अग्रवाल, श्रीमती अलका अग्रवाल, श्री. ईशानजी अग्रवाल, श्रीमती ईशिता अग्रवाल, श्रीमती नीलम मित्तल, श्री. नवेंदुजी द्विवेदी, श्रीमती राखी मित्तल, श्रीमती रिद्धि मित्तल, श्री. अश्वथजी मित्तल, श्री. उमा शंकरजी डालमिया, श्री. प्रेम सिंहजी, **मुंबई:** श्रीमती विमलावती पूरनचंद गुप्ता चॅरि.ट्रस्ट, श्रीमती विमलादेवी सिंगी, श्री. प्रमोदजी जोशी, **इंदौर:** श्री. प्रकाशचंद्रजी खंडेलवाल, **नई दिल्ली:** श्री. परीक्षितजी वशिष्ट, **बहादुरगढ:** श्री. मुकेशजी गुप्ता, **सोनिपत:** श्री. शिवकुमारजी शर्मा, **नागपुर:** श्री. उल्हासराव केळकर, **कोलकाता:** श्री. सज्जनकुमारजी केडिया, श्रीमती आशा एवं श्री. राघवेंद्रजी मोहता, श्रीमती उषा गुटगुटिया, श्री. मनोजजी टिबडेवाल, **कटक:** श्री. रमाकांतजी मोदी, **भुवनेश्वर:** श्री. रामअवतारजी पोद्दार, **सुरत:** श्रीमती शोभा भट्टड, श्री. नटवरलालजी काबरा, **कोपरगांव:** श्री. किशोरजी बजाज, **नासिक:** श्री. रमेशजी काबरा, **अहमदाबाद:** श्री. अशोक कुमारजी काबरा, **रायपुर:** श्रीमती रमा नाथानी, **नॉयडा:** श्री. सोमेशजी मुद्‌गल, **डालटन गंज:** श्री. भगवतीप्रसादजी, **हजारीबाग:** श्री. मयंकजी मुनका, **पुरुलिया:** श्रीमती तनु सरावगी, **जयपुर:** श्री. महेंद्रकुमारजी दाधिच, श्री. नरेंद्रप्रसादजी शर्मा, **जोधपुर:** श्री. हरिकृष्णजी व्यास, श्रीमती सीमा गर्ग, श्री. एस. डी. पालीवाल, श्री. मनसुखजी रामलालजी मुंधरा एच.यू.एफ., श्री. ओमप्रकाशजी काबरा, श्री. अभिनवजी, **कोल्हापुर:** श्री. राधेश्यामजी बियाणी, **मेडता सिटी:** श्री. नथमलजी बिर्ला, **दिल्ली:** श्री. प्रमोदजी लोहिया परिवार, **ब्यावर:** श्री. संदेशजी भुतडा, **धनसावगी:** श्री. बालकिशनजी जाजू, **अहमदनगर:** श्री. विजयनाथजी केदारी, श्री. पोपटलालजी चांडक, श्री. दयारामजी बंग, श्रीमती विमलाबेन पटेल, **पैठण:** श्री. रतिलालजी नागोरी, **संगमनेर:** श्री. हृषिकेशजी पोफळे, **विरार:** श्रीमती किमया नाईक, **औरंगाबाद:** श्री. शिवराजजी देशमुख, **कान्हूर पठार:** श्री. नवले परिवार, **आलंदी:** श्री. धीरजजी कुबेर,

बर्नबी, व्हँकुवर का नूतन मंदिर

पू. बालयोगी सदानंद महाराज के साथ ब्रॅम्प्टन में

सनीव्हेल, कॅलिफोर्निया में हनुमान कथा

ज्ञानेश्वर मंदिर, टोरंटो में वारकरी संप्रदायानुसार हरिपाठ का गायन

'DHARMASHREE' Periodical - Quarterly
Posted under P.O. Clause No. 129 Regn. No. MAH/HIN/2001/4041

साभिवादन श्रद्धांजलि!

भारतरत्न
स्व. श्री. अटलबिहारी वाजपेयी

भीतर बाहर सन्नाटा है
बार बार मन रोय ।
उलट पुलट इतिहास देख लो
ऐसा 'अटल' न होय ।।

स्वामी गोविंददेवगिरिः

पूज्य मुनीश्वर
मुक्तात्मा तरुणसागरजी महाराज

सत्यवचन अरु निर्भयता थी
मूर्तिमंत अद्भुत साकार ।
हे भारत के परम तपस्वी
श्रद्धा वंदन बारम्बार ।।

स्वामी गोविंददेवगिरिः

यह पत्र स्वत्वाधिकारधारक श्रीकृष्ण सेवा निधि के लिए मुद्रक और प्रकाशक डॉ. प्रकाश पांडुरंग सोमण ने स्वानंद प्रिंटर्स, डेक्कन जिमखाना, पुणे में मुद्रित कराकर श्रीकृष्ण सेवा निधि, ३ मानसर अपार्टमेंटस्, पुणे विद्यापीठ मार्ग, पुणे – ४११०१६ महाराष्ट्र (भारत) से प्रकाशित किया । संपादक : डॉ. प्रकाश पांडुरंग सोमण । सदस्यों के अतिरिक्त प्रसाद – मूल्य प्रति अंक रु. ५/– मात्र